कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

रत्नागिरी प्रतिभा

विभागीय ई-पत्रिका - 2024 **अंक-08**

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

रत्नागिरी प्रतिभा

विभागीय ई-पत्रिका - 2024 अंक-08

अनुक्रमणिका

संरक्षक
श्री रविंद्र आर.कांबळे
क्षेत्रीय रेल प्रबंधक,रत्नागिरी

परामर्श
श्री सत्येन्द्र कुमार शुक्ला
मुख्य राजभाषा अधिकारी

सदानंद चितळे
राजभाषा अधिकारी

संपादक
राजेश जोशी
क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी

सहसंपादक
संतोष पाटोळे
कनिष्ठ अनुवादक

* क्षेत्रीय रेल प्रबंधक की कलम से
* संपादकीय

लेख/काव्य

* यादें श्रम शक्ति की
* कॉर्पोरेट जगत में हिंदी की स्थिति
* बिजली : आधुनिक जीवन की रीढ़
* भारतीय संस्कृति
* विद्युत सुरक्षा
* विश्व हिंदी दिवस: हिंदी भाषा का गौरव
* कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भविष्य में इन्सानों के लिए शाप या वरदान?
* चिनाब पूल का निर्माण एवं विशेषताएं
* “स्वतंत्र भारत @75:सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता"
* हिंदी भाषा का महत्व
* राजभाषा पखवाड़ा
* "अपना प्यारा भारत"
* दोस्ती

क्षेत्रीय रेल प्रबंधक की कलम से.....

किसी भी देश की मौलिक सोच सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है।अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र को मजबूत बनाता है।अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वाभाविक होती है और ऐसा अनुवादित भाषा के माध्यम से संभव नहीं है, इसलिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अनुवाद के बजाय मूल रुप से हिंदी में कार्य करना आवश्यक है।संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोकर हिंदी ने अनेकता में एकता की भावना को आम जनता में निरंतर बनाए रखा है।

साथियो, कोंकण रेलवे के रत्नागिरी क्षेत्र की ई-हिंदी पत्रिका "रत्नागिरी प्रतिभा" अंक-08 में जिन कर्मियों ने अपने लेख के माध्यम से विभिन्न विषयों की विशेषताओं को पाठकों के समक्ष प्रदर्शित किया है, उन सभी का मैं अभिनंदन करता हूं। साथ ही इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं संपादक मंडल को बधाई देता हूं।

रविंद्र आर. कांबळे
क्षेत्रीय रेल प्रबंधक,रत्नागिरी

संपादकीय.....

यह हर्ष का विषय है कि रत्नागिरी क्षेत्र की स्वतंत्र हिंदी ई पत्रिका "रत्नागिरी प्रतिभा" के 8 वे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी भारत की राजभाषा के साथ-साथ हर भारतीय के हृदय की भाषा भी है,अतः हम सभी का यह संवैधानिक कर्तव्य बनता है कि हम अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करे राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन महत्वपूर्ण कार्य है।इनमे से सभी सदस्य कार्यालय कर्मियों को अपनी रचनात्मक क्षमता प्रकट करने का एक सशक्त मंच प्राप्त होता है।कोकण रेलवे का रत्नागिरी क्षेत्र इस दायित्व का निर्वाहन कर रहा है।

राजभाषा विभाग, रत्नागिरी द्वारा हिंदी ई पत्रिका "रत्नागिरी प्रतिभा" आपकी अपनी पत्रिका है।प्रकाशित लेख रचनाओं अन्य सामग्री आदि के बारे में अपनी टिप्पणिया अवगत कराएं, जिससे कि हम आपकी रूचि के अनुसार पत्रिका प्रकाशित करते रहे।आशा है कि आपकी पत्रिका की विकास यात्रा में आप अपना पूरा योगदान देंगे।

अंत में यह भी अनुरोध रहेगा कि को"रत्नागिरी प्रतिभा" का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाए ताकि अधिकाधिक पाठक जुड़ सके।

- राजेश पी जोशी
क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी एवं
क्षेत्रिय विद्युत अभियंता /रत्नागिरी

कोंकण रेलवे एक अद्‌वितीय, अद्‌भुत परियोजना है, जिसे अभियांत्रिकी चमत्कार माना जाता है। इसके निर्माण के दौरान और पश्चात अपने कर्तव्य का पालन करते हुए हमारे जो साथी शहीद हो गए उनके लिए श्रद्‌धांजलि पर कविता।

यादें श्रम शक्ति की।

कोंकण रेल का हुआ अति शीघ्र निर्माण,
श्रम और शक्ति का है यह परिणाम।
कोंकण रेल का हुआ विश्व में बुलंद नाम,
यह आपके कार्यकुशलता का अंजाम।
कर्तव्य का पालन करना था आपका काम,
कार्य पूर्ति से नहीं चाहते थे कोई इनाम।
ईश्वर ने किया आपके कार्यपटुता का सम्मान,
कार्य पूर्ति के पहले ही दिया आपको स्वर्ग का इनाम।
व्यर्थ न जाएगी आपकी कुर्बानी कभी,
आपके कार्य का उत्तरदायित्व, लेते हैं आज से हम सभी।
कार्य पूर्ति में हुए जाने अनजाने कुर्बान,
करते हैं हम, सब उन्हें सलाम।
उनका कार्य है हमें आदर्श प्रमाण,
हुआ इसीलिए श्रम शक्ति स्मारक का निर्माण।
स्मारक की धूल लगाते हैं माथे को,
यही है हमारी मानवंदना आपको।
जय हिन्द, जय हिन्द।

सदानंद चितले,
राजभाषा अधिकारी,
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

कॉर्पोरेट जगत में हिंदी की स्थिति

विश्व अर्थव्यवस्था पर कॉर्पोरेट जगत यानी बड़ी कंपनियों का शिकंजा कसता जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में भारत में भी कॉपोरेट जगत ने अपनी जड़ें काफी मजबूत कर ली हैं। देसी कंपनियों के साथ-साथ बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी तेजी से भारत के व्यापार-व्यवसाय में खुदरा व्यापार तक अपनी व्यवस्थ बनाने में लगी हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का अधिकांश व्यापार-वाणिज्य कॉर्पोरेट जगत के माध्यम से संचालित होने लगा है। लघु और कुटीर उद्योगों के व्यवसाय को भी धीरे-धीरे कॉर्पोरेट जगत अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है। यहाँ तक कि किराने और सब्जी की दुकानों से लेकर रोजमर्रा की जरूरत के सामान भी बड़ी कंपनियों द्वारा बड़े-बड़े मॉलों आदि के माध्यम से बिकने लगी है।

यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि भाषा वही चलती है जो पेट की भाषा होती है। जो रोजी-रोटी की भाषा होती है। जो संपन्नता और सम्मान की भाषा होती है। रोजी-रोटी और संपन्नता व सम्मान का रास्ता बड़े स्तर पर कॉर्पोरेट जगत से होकर गुजर रहा है। आज भारत में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के सामने अपने अस्तित्व के लिए जो चुनौतियाँ आ खड़ी हुई हैं, उसका सबसे बड़ा कारण यही है कि अपनी नीति ने जाने-अनजाने में भारतीय भाषाओं को रोजी-रोटी और संपन्नता और सम्मान से दूर कर यह स्थान अंग्रेजी को दे दिया है। भारत में मार्केटिंग की विवशताओं के चलते विज्ञापन में भले ही कुछ हद तक हिंदी व भारतीय भाषाएं दिखती हों अन्यथा उद्योग एवं व्यापार जगत की भाषा अंग्रेजी ही है। ऐसे में हिंदी के प्रयोग और प्रसार को बढ़ाना है और उसे रोजी-रोटी, संपन्नता और सम्मान की भाषा बनाना है तो उसका मार्ग भी कॉर्पोरेट जगत से होकर ही जाएगा।

हिंदी को उद्योग एवं व्यापार जगत की भाषा बनाने के संदर्भ में हमें दो स्तर पर विचार करना होगा। एक वह जिसका संबंध किसी कंपनी के आंतरिक कार्यकलापों से है और दूसरा वह जो जनता से या ग्राहकों से जुड़ता है। दूसरा पक्ष जो जनता या ग्राहकों से जुड़ता है उसमें जनता की भागीदारी के चलते या मार्केटिंग के चलते जनभाषा, जिसमें हिंदी प्रमुख है, उद्योग एवं व्यापार जगत के लिए हिंदी की आवश्यकता और ग्राहकों के लिए इसकी अपेक्षा बहुत अधिक है। यही कारण हैं कि कंपनियाँ अपने उत्पाद के विज्ञापन के लिए हिंदी का सर्वाधिक उपयोग करती हैं। उसमें भी विभिन्न टी.वी. चैनलों पर अधिकांश विज्ञापन हिंदी में ही होते हैं। लेकिन जहाँ बात आती है ग्राहकों को विभिन्न ग्राहक कानूनों के अंतर्गत जानकारी देने की वहाँ ये कंपनियाँ स्थानीय भाषा या हिंदी से दूरी बनाते दिखती हैं। वहाँ उन्हें जनभाषा के प्रयोग में लाभ के बजाए हानि ही नजर आती है। जहाँ लुभावने विज्ञापनों से ग्राहक बढ़ते हैं वहीं ग्राहक कानूनों के अंतर्गत उनकी भाषा में उत्पाद के संबंध में सही जानकारी देने से सच्चाई सामने आने से उन्हें जोखिम नजर आता है। फिर जब ग्राहक ही जागरूक न हो तो कंपनियों को क्या पड़ी है कि आ बैल मुझे मार। इसलिए भारत में ज्यादातर कंपनियों द्वारा उत्पाद की जानकारी केवल अंग्रेजी में दी जाती है। इसलिए जब तक ग्राहक कंपनियों पर इस बात के लिए दबाव नहीं बनाएंगे कि उन्हें उत्पाद के संबंध में जानकारी हिंदी में या उनकी भाषा में दी जाए तब तक वे इसके लिए आगे नहीं आएँगी । लेकिन ग्राहकों की प्रभावी मांग के आगे तो कंपनियों को झुकना ही पड़ता है। इसीलिए हमने 'मुंबई हिंदी सम्मेलन' और

हिंदी- सेवियों के साथ मिलकर बड़ी-बड़ी कंपनियों से यह माँग करने का बीड़ा उठाया है कि वे हमें अपने उत्पाद की जानकारी हिंदी में भी दें। लेकिन इस कार्य में ज्यादातर हिंदी-प्रेमियों की रुचि नहीं है। क्योंकि इसमें न तो लाभ है और न ही सम्मान, इस कार्य में बड़ी संख्या में लोगों को आगे लाने की आवश्यकता है।

इस अभियान में जो एक बड़ी बात उभर कर सामने आई है वो यह है कि कंपनियाँ यह तर्क देती हैं कि आज तक तो कभी किसी ने अपनी भाषा या हिंदी की माँग ही नहीं की। दो चार लोगों की माँग के लिए वे क्यों मुसीबत मोल लें। जब हिंदुस्तान लीवर जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनी से कहा कि जब वह छोटे-छोटे देशों में उत्पाद की जानकारी उनकी भाषा में देती है तो सवा सौ करोड़ के देश के ग्राहकों और उनकी भाषा कीउपेक्षा क्यों? उनका जवाब था कि भारत के ग्राहक कानूनों में ऐसा कोई प्रावधान ही नहीं कि ग्राहक को ग्राहक की भाषा में या हिंदी में जानकारी दी जाए। ऐसी ही दलील कई अन्य कंपनियों की भी थी। यानी एक बहुत बड़ी जरूरत जहाँ देश की जनता को जगाने की है वहीं यह भी आवश्यक है कि ग्राहक कानूनों में यह प्रावधान किए जाएँ कि ग्राहक कानूनों के अंतर्गत दी जानेवाली जानकारी हिंदी तथा ग्राहक भाषा में हों। यदि एक बार कानून बन जाए तो देशभर में सभी उत्पादों पर हिंदी छा जाएगी। इसके लिए विभिन्न राजनैतिक दलों, मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखकर ग्राहकों को ग्राहक- कानूनों का लाभ मिले इसलिए उक्त जानकारी जनभाषा में दिए जाने संबंधी कानून बनाने की माँग की जा रही है। अगर सभी हिंदी -प्रेमी इस मुहीम से जुड़ें तो सरकार व कॉर्पोरेट जगत दोनों को झुकना पड़ेगा और इस प्रकार निश्चय ही हिंदी कॉर्पोरेट जगत की प्रमुख भाषा होगी।

एक और बड़ी और आश्चर्यजनक समस्या यह देखने में आती है कि बड़ी-बड़ी कंपनियाँ अक्सर परंपरागत ढंग से, बिना इस बात की परवाह किए कि उनकी बात ग्राहकों को ठीक से समझ में आ भी रही है या नहीं, धड़ल्ले से विज्ञापन अंग्रेजी में देती दिखाई देते हैं। इसमें यह भी देखने में आया है कि यह समस्या निजी क्षेत्र के मुकाबले सरकारी बैंकों और कंपनियों में ज्यादा दिखाई पड़ती है। थोड़ी गहराई में जाने पर यह तथ्य सामने आता है कि विज्ञापन एजेंसियों में बैठे लोग प्राय: अंग्रेजी के वातावरण में बढ़े-पढ़े हैं और इसी के चलते तमाम तरह की विज्ञापन अवधारणाएं अंग्रेजी में ही बनकर निकलती हैं और फिर जहाँ कानूनी बाध्यता या किसी तरह की आवश्यकता होती है तब उसे जैसे-तैसे हिंदी में लाने की कवायद शुरु होती है। यही नहीं विज्ञापन एजेंसियों में बैठे लोगों की मानसिकता व अंग्रेजी की नकल की आदत के चलते अब हिंदी को भी अनावश्यक रूप से देवनागरी में लिखने के बजाए रोमन में लिखा जाने लगा है। भले ही कंपनियाँ अपने इस कृत्य को किसी तर्क का जामा पहनाने का प्रयास करें लेकिन सच्चाई यह है कि अंग्रेजी में विज्ञापन न तो उद्योग एवं व्यापार जगत की माँग के कारण होते हैं और न ही ग्राहकों की सुविधा के लिए, अक्सर ये विज्ञापन कंपनी के उत्पाद या सेवा के बजाए अंग्रेजी और रोमन लिपि का प्रचार-प्रसार करते दिखाई देते हैं। ग्राहक भी स्वयं को ठगा और बेबस सा महसूस करता है, वहीं कंपनियों भी जाने-अनजाने करोड़ों रुपए मार्केटिंग और प्रचार के नाम पर अंग्रेजी और रोमन लिपि के प्रचार पर बर्बाद कर देती हैं। यहाँ भी एक ही रास्ता है कि ग्राहक सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से आवाज उठाए और अंग्रेजी व रोमन लिपि में लिखे विज्ञापनों के बजाए ग्राहक- भाषा में यानी हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में विज्ञापन की माँग करे, इसके लिए नकलपरस्त विज्ञापन-जगत को भी झिझोड़ने की आवश्यकता है।

पिछले दो दशकों में एक और बड़ी घटना घटी जिसने कॉर्पोरेट जगत को लगभग पूरी तरह अंग्रेजी की ओर धकेल दिया। भारत सरकार के बड़े-बड़े संगठन, बैंक, उपक्रम जो संघ या राज्य सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के कारण काफी कार्य हिंदी में करने लगे थे, अचानक लगभग पूरी तरह अंग्रेजी की ओर लौट आए। 1990 के दशक के बाद से प्रौद्योगिकी के विकास ने विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों के संगठनों की कार्य पद्धतियों में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया गया है। विशेषकर खुदरा, निर्माण और बैंकिंग उद्योग कुछ ऐसे औद्योगिक क्षेत्र हैं जिन्होंने आई.टी. समाधानों को क्रियान्वित किया है जो उन्हें अपने

दैनिक क्रिया कलापों का बेहतर निष्पादन, प्रबंधन और नियंत्रण करने और अपनी उत्पादकता को बढ़ाने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण साधन साबित हुए हैं। कार्यकुशलता बढ़ाने तथा खर्च घटाने की दृष्टि से ऐसे आई.टी. समाधान सॉफ्टवेयरों का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। सरकारी संगठनों, बैंकों, बीमा कंपनियों, स्थानीय निकायों का कार्य, बिजली-पानी के बिल, आदि तेजी से ऐसी कंप्यूटर प्रणालियों से जुड़ते जा रहे हैं।

आई.टी. समाधानों की अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध के चलते, अधिकांश भारतीय संगठनों और कंपनियों को ग्राहक-सेवा, जनसंचार और मार्केटिंग जैसे अपनी रणनीति के महत्वपूर्ण तत्वों की उपेक्षा करते हुए इन्हें अंग्रेजी में कार्यान्वित करने पर मजबूर होना पड़ा, क्योंकि ऐसे आई.टी. समाधान हिंदी और भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ही नहीं थे। हिंदी और देवनागरी भाषा लिपियों की बनावट और उनकी जटिलता ने भी एक अवरोध उत्पन्न किया और विभिन्न संस्थानों को मानक सॉफ्टवेयरों का निर्माण अंग्रेजी में करनेपर मजबूर होना पड़ा। आज भी स्थिति कमोबेश वैसी ही है। सैप, जे.डी ऐडवर्ड, कोर बैंकिंग सोल्यूशन, बीमा, राजस्व, पासपोर्ट कार्य आदि संबंधी ज्यादातर ई.आर.पी. सॉफ्टवेयर प्रायः मूलत: अंग्रेजी में हैं। जहाँ एक ओर ऐसे आई.टी. समाधानों के हिंदी भाषा के लिए किसी समर्थन या सहायता की कोई व्यवस्था नहीं थी। वहीं इन्हें हिंदी में उपलब्ध करवाने के लिए पर्याप्त संसाधनों और जागरूकता का भी अभाव भी दिखाई देता है।

हालांकि आज ऐसी टेक्नोलॉजी उपलब्ध है कि आई.टी. समाधानों यानी ई.आर.पी. सॉफ्टवेयरों, कोर बैंकिंग, कोर- बीमा सॉफ्टवेयर, प्रशासन, मानवसंशाधन (HR) सॉफ्टवेयरों आदि को प्रारंभ से ही या बाद में उन पर हिंदी अथवा द्विभाषी/त्रिभाषी व्यवस्था उपलब्ध करवाई जा सके। ऐसे सॉफ्टवेयर जो मूल रूप से अंग्रेजी में बने हैं और जिन पर हजारों करोड़ रुपए खर्च होने के कारण दोबारा हिंदी या द्विभाषी रूप में बनवाना आसान नहीं है, उन पर भी (सॉफ्टवेयर की मूल प्रोग्रामिंग में हस्तक्षेप किए बिना) हिंदी या हिंदी-अंग्रेजी में कार्य की या आउटपुट की सुविधा प्राप्त की जा सकती है। इस क्षेत्र में भारत (पुणे) की एक कंपनी 'इमेज प्वायंट' द्वारा कुछ समय पूर्व विकसित टेक्नोलॉजी ने क्रांतिकारी समाधान उपलब्ध करवाएं। इसकी विशिष्टता के चलते एक अंतर्राष्ट्रीय कंपनी 'लिंग्वा नेक्स्ट' ने इसका अधिग्रहण किया। इस टेकनोलॉजी का प्रयोग विश्व के अनेक देशों में भाषा-समाधानों के लिए सफलतापूर्वक किया जा रहा है। कुछ समय पूर्व विश्व की सबसे बड़ी आई.टी. समाधान ई.आर.पी, सॉफ्टवेयर कंपनी SAP ने इसके भाषा समाधान के चलते 'लिंग्वा-नेक्सट' के साथ भाषा समाधानों के लिए करार किया है। भारत में अभी भी ऐसी टेकनोलॉजी की जानकारी का और उसके प्रयोग का अभाव है और आई.टी. समाधानों पर हिंदी का प्रयोग न के बराबर है।

आई.टी. समाधानों में जाने-अनजाने हिंदी के प्रयोग की व्यवस्था न करवाने के कारण वह सारा कार्य जो कल तक हिंदी में होता था अंग्रेजी में होने लगा है। इसमें हमारी बड़ी- बड़ी नामचीन आई.टीं कंपनियों की भी बड़ी भूमिका है जो अक्सर इस प्रकार के सॉफ्टवेयरों में हिंदी के प्रयोग में बाधक बन कर खड़ी दिखाई देती हैं। यह भी कहा जाता है कि यदिआई.टी. समाधानों को हिंदी में करवा लिया जाए तो हिंदीतर भाषियों को दिक्कत हो सकती है। लेकिन यह भी देखने में आया है कि जिन कंपनियों, बैंकों ने इन्हें हिंदी में अलग से बनवाया है वे केवल दिखावे के लिए ही रहे, उनका प्रयोग नगण्य ही रहा। उनका मेंटेनेंस तक नहीं हो सका। इसलिए आई.टी. समाधानों यानी ई.आर.पी. सॉफ्टवेयरों, कोर बैंकिंग, कोर-बीमा सॉफ्टवेयरों आदि में हिंदी के प्रयोग का एक ही रास्ता बचता है कि इन्हें एक साथ द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी) प्रयोग की दृष्टि से तैयार करवाया जाए। यानी आउटपुट जहां भी निकले उसमें अंग्रेजी के साथ हिंदी भी हो। उदाहरण स्वरूप एक ही बीमा पॉलिसी में तमाम जानकारियाँ हिंदी-अंग्रेजी में साथ-साथ हो ताकि हिंदी की उपेक्षा न की जा सके। साथ ही ग्राहकों के हितों की रक्षा भी हो और वे सभी शर्तों आदि को समझ सकें। यदि कॉर्पोरेट जगत आई.टी. समाधानों में हिंदी के समाधानों को अपना ले तो इनका 90-95% जो कार्य आई.टी. समाधानों यानी ई.आर.पी. सॉफ्टवेयरों, कोर बैंकिंग, कोर-बीमा सॉफ्टवेयरों आदि से होता है

उसमें हिंदी का समावेश स्वयंमेव हो जाएगा। हमें प्रौद्योगिकी विकास के क्षेत्र में तथा नीतिगत स्तर पर ऐसे निर्णय लेने होंगे ताकि ऐसे सभी प्रौद्योगिकी-समाधान सॉफ्टवेयर प्रारंभ से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेजी साथ-साथ) तथा आवश्यकतानुसार क्षेत्रीय भाषाओं में कार्य के लिए तैयार करवाए जाएँ। फिलहाल ऐसा करना संभव नहीं है वहाँ उपलब्ध प्रौद्योगिकी के माध्यम से ऐसी सुविधाएँ उपलब्ध करवानी होंगी ताकि सूचनाएं, रिपोर्ट, पत्रादि हिंदी सहित द्विभाषी / त्रिभाषी रूप में साथ-साथ उपलब्ध हो सकें। ऐसी प्रौद्योगिकी कार्यान्वित करने के साथ-साथ हमें इसके लिए सभी स्तरों पर आई.टी. विभाग का समर्थन, प्रशिक्षण तथा रख-रखाव आदि की व्यवस्था पर भी ध्यान देना होगा, ताकि प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी और भारतीय भाषाओं का समुचित प्रयोग भी सुनिश्चित किया जा सके।

इसी प्रकार बैंकों व टेलीकॉम कंपनियों आदि द्वारा एस. एम. एस.एलर्ट, ऑन-लाइन सुविधाएं आदि तरह-तरह की सुविधाएँ शुरु की जा रही हैं, जो आज की आवश्कताएं हैं। ये सुविधाएं जो अब तक अंग्रेजी में हैं इन्हें हिंदी सहित अनेक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाया जा सकता है लेकिन कंपनियों द्वारा मांग न करने के कारण निजी क्षेत्र की आई.टी. कंपनियाँ ऐसी प्रौद्योगिकी के विकास में ज्यादा रुचि नहीं दिखाती। जो आई.टी. कंपनियाँ इन्हें बनाती भी हैं वे इनकी मार्केटिंग के लिए परेशान दिखाई देती हैं। जब तक ग्राहकों को ये तमाम सुविधाएँ जनता की भाषा में देना अनिवार्य नहीं किया जाएगा, बात बनना कठिन है।

उद्योग एवं व्यापार जगत में हिंदी के प्रयोग की एक बड़ी समस्या यह है कि आज भी ज्यादातर भारतीय जो कंप्यूटर पर काम करते हैं उन्हें यहां तक नहीं पता कि कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य कैसे किया जाए। आज जबकि अंग्रेजी की तरह हिंदी सहित तमाम भारतीय भाषाओं के लिए यूनीवर्सल एनकोडिंग के फोट की सुविधा है जो सभी कंप्यूटरों पर उपलब्ध हैं। भारतीय भाषाओं के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा सरल व उन्नत इन्स्क्रिप्ट की-बोर्ड उपलब्ध करवाया गया है जिसे मात्र 18 घंटे के अभ्यास से सीखा जा सकता है। यही नहीं माइक्रोसॉफ्ट और गूगल ने निःशुल्क ऐसे इंटेलीजेंट फोनेटिक की बोर्ड उपलब्ध करवा दिए हैं जिनसे कोई व्यक्ति बिना टाइपिंग सीखे रोमन लिपि के माध्यम से हिंदी अथवा किसी भारतीय भाषाओं में कार्य कर सकता है। लेकिन समस्या फिर वहीं रह जाती है कि सरकारी तंत्र के कुछ लोगों को छोड़कर किसी को इसकी जानकारी ही नहीं है। इसके लिए दो स्तरों पर अविलंब कार्य किए जाने की आवश्यकता है। पहला तो यह कि कंप्यूटर शिक्षा के अंतर्गत स्कूल में सभी बच्चों को हिंदी अथवा मातृभाषा में इन्स्क्रिप्ट की बोर्ड का प्रशिक्षण दिया जाए तथा हिंदी में कार्य करने संबंधी सभी सुविधाओं से अवगत करवाया जाए। लेकिन इस मामले में काफी उदासीनता बरती जा रही है। डॉ. ओम विकास जिन्होंने कंप्यूटर पर हिंदी व भारतीय भाषाओं के क्षेत्र में काफी कार्य किया है, जब उनसे इस विषय पर चर्चा हुई तो उन्होंने बताया कि वे जब सी. बी. एस. सी. बोर्ड में कंप्यूटर शिक्षा पाठ्यक्रम समिति के अध्यक्ष थे तो उन्होंने इसे पाठ्यक्रम में रखा था। इसके बावजूद भी यह कहीं लागू दिखाई नहीं देता। इस संबंध में मानव संसाधन मंत्रालय को कई बार माँग की गई है, इस दिशा में संघ सरकार व राज्य सरकारों को इस माँग के लिए प्रभावी व संगठित प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। जब तक भारतवासियों को कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य की जानकारी व प्रशिक्षण नहीं होगा तो कॉर्पोरेट जगत हिंदी को कैसे आत्मसात कर पाएगा।

कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य कैसे किया जाए ? इसकी जानकारी आम आदमी को देने के लिए हिंदी सम्मेलन, मुंबई के गूगल व फेस बुक समूह के माध्यम से एक अभियान चलाया जा रहा है, जिसका लाभ हजारों हिंदी व भारतीय- भाषा प्रेमियों को मिला है। हिंदी सम्मेलन, मुंबई गूगल व फेस बुक समूह पर आए दिन हिंदी व भारतीय भाषाओं के प्रति जागरूकता संबंधी संदेश देने के साथ-साथ यह भी कहते हैं कि जिसे भी कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य की जानकार चाहिए वह अपना अनुरोध भेजें। अनुरोध प्राप्त होते ही उन्हे ई-मेल से जानकारी भेज दी जाती है। उनसे यह भी अनुरोध किया जाता है कि वे इस जानकारी को आगे भी लोगों को दें। इस कार्य को भी बड़े पैमाने पर किए जाने की आवश्यकता है। अच्छी बात यह है कि इस

अभियान को अच्छा प्रतिसाद मिल रहा है।

यदि हमें कॉर्पोरेट जगत में हिंदी को प्रतिष्ठित करना है तो सर्वप्रथम हमें हिंदी के प्रयोग व प्रसार के लिए आई.टी. के आधुनिकतम रथ भी उपलब्ध करवाने होंगे ताकि हिंदी भारतवासियों के कल्याण की सारथी होने के साथ-साथ ग्राहक-भाषा के रूप में विश्व की प्रमुख भाषाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ सके। आज जबकि सरकार द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी को सर्वाधिक महत्व दिया जा रहा है और बड़े पैमाने पर देश की सभी व्यवस्थाओं को 'डिजिटल इंडिया' अभियान के अंतर्गत सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ा जा रहा है यह आवश्यक है कि इनमें तथा कॉर्पोरेट जगत सही शासन-प्रशासन द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही तमाम ऑनलाइन सुविधाओं में देश की राजभाषा हिंदी व आवश्यकतानुसार स्थानीय भाषाओं का समावेश किया जाए।

रविंद्र आर. कांबळे
क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक, रत्नागिरी

बिजली : आधुनिक जीवन की रीढ़

विज्ञान ने मनुष्य को अनेक वरदान स्वरूप अविष्कार दिए हैं जिनमें से बिजली भी एक वरदान है। बिजली हमारी जिंदगी का एक सबसे अभिन्न अंग है जिसपर आज के समय में हम पूरी तरह से निर्भर करते हैं। यह दुनिया का आश्चर्य है, बिजली के बिना आधुनिक जीवन के बारे में सोचना मुश्किल है। आज बिजली के अभाव में एक पल भी बिता पाना कष्टकर हो जाया करता है। बिजली! एक क्षण के लिए भी यदि कहीं बिजली गुल हो जाती है, तो लगता है जैसे तेज गति से भाग रही गाड़ी को अचानक ब्रेक लग जाने से वह एक झटके के साथ रुक गई हो।

प्रकृति के तत्वों में बिजली मौजूद है| यह मशीनों द्वारा भी उत्पन्न होता है| बिजली आदमी के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है| यह ईमानदारी से लाया गया चमत्कार है। यह शक्ति का स्रोत, प्रकाश और गर्मी के स्रोत के रूप में और कुछ रोगों के एक रोगाणु के रूप में प्रयोग किया जाता है। शक्ति के एक स्रोत के रूप में उसने सभी कष्टदायी व्यक्ति को राहत दी है जो वह करता था और मानवता के लिए महान उछाल साबित हुआ हैं। रेलवे, ट्राम कार, ट्रॉली बसों, मोटर कारों को चलाने के लिए बिजली का इस्तेमाल किया गया है। वर्तमान समय में दुनिया में कुछ भी नहीं है जिसमें बिजली ने अपना स्टाम्प नहीं दिया है। आधुनिक दुनिया में हम अपने आज्ञाकारी स्लेव, बिजली होने पर गर्व महसूस करते हैं।

आज सारे वैज्ञानिक व्यावसायिक और व्यावहारिक संसार का जीवन बिजली की रीढ़ पर ही टिका हुआ है। आज का जीवन बिजली के अभाव में एक कदम भी नहीं चल सकता। बिजली जहां एक झटके में मानव के प्राण ले सकती है, वहीं प्राणदान और रक्षा के लिए भी आधुनिक चिकित्सा-विज्ञान उसके झटकों का भरपूर प्रयोग करता है। शहरी जीवन ही नहीं, आज ग्रामीण जीवन भी बिजली के अभाव में अपने को लंगड़ा-लूला अनुभव करने लगा है। पहले ग्रामीण लोग ज्यों-त्यों कर समय काट लिया करते थे। अपने सभी प्रकार के दैनिक कार्य फिर चाहे वह कृषि-कार्य ही क्यों न हो, निश्चिंत होकर कर लिया करते थे। रात को घरों में सरसों-मिट्टी के तेल का दीपक टिमटिमाकर उजाला कर लिया करते थे। परंतु आज इस ग्राम-विद्युतिकरण की प्रक्रिया ने वहां के जीवन के मानव-मूल्यों, सांस्कृतिक चेतनाओं को भी एकदम बदलकर, परावलंबी बनाकर रख दिया है। ट्यूबवैल न चलने से खेत सूखे रह जाते हैं और फसलें अनबोई रह जाती है। कटाई-निराई तक संभव नहीं। वहां के परिश्रमी और स्वावलंबी मनुष्यों को भी बिजली ने आज पूरी तरह से अपना गुलाम बनाकर रख दिया है।

आज के आधुनिक युग में मनुष्य बिजली का उपयोग ज्यादा ही कर रहा है जिससे कि पर्यावरण को भी नुकसान पहुँच रहा है। बिजली उत्पन्न करने में प्रयोग होने वाले स्त्रोत जो कि एक बार प्रयोग करने से नष्ट हो जाते है वह धीरे धीरे खत्म होते जा रहे हैं। मनुष्य चारों तरफ से बिजली से चलने वाले उपकरणों से घिरा हुआ है। वह हर काम के लिए बिजली पर निर्भर रहता है। व्यक्ति जितना बिजली को बचाएगा उतना ही उसके पैसे की बचत होगी साथ ही पर्यावरण को भी हानि कम पहुँचेगी। हर व्यक्ति को बिजली का खर्च कम करना चाहिए और बिजली जो कि ऊर्जा का एक रूप है उसे सरंक्षित रखना चाहिए।

बिजली को बचाने के लिए हर व्यक्ति को अपने स्तर पर शुरूआत करनी चाहिए। इसके लिए व्यक्ति बहुत से कदम उठा सकता है। कुछ लोग दिन में भी घर में लाईट चला कर बैठे रहते है उन्हें चाहिए कि वह दिन में लाईट न चलाए और जितना हो सके उतना काम सूर्य की रोशनी में ही करे। लोगों को सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा का प्रयोग करना चाहिए । घरों में बड़े बड़े बल्ब की जगह एलईडी बल्ब लगाए जाने चाहिए। हमारी बिजली की बचत किसी गरीब के घर में रोशनी कर सकती है।

व्यवहार के स्तर पर आज जीवन के अधिकांश काम बिजली पर आश्रित हैं। ट्रेनें, ट्रामें, ट्रॉलियां, लिफ्टें, पंखें, कूलर, फ्रिज आदि की बात तो जाने दीजिए, आज का जीवन बिजली के अभाव में दिन के चौड़े प्रकाश में भी अंधा बनकर रह जाता है। सारे काम, सारी गतिविधियां जहां की तहां स्थगित होकर रह जाया करती हैं। ठीक भी तो है, जब रीढ़ ही ठीक न होगी, सीधी न रह पाएगी, तो शरीर किसी काम के लिए खड़ा ही कहां हो पाएगा? लोगों को बिजली की अहमियत को समझना चाहिए और भविष्य में भी प्रयाप्त मात्रा में बिजली उत्पन्न की जा सके इसके लिए अभी से कम प्रयोग करना चाहिए। जितना हो सके उतना हमें प्राकृतिक रोशनी का सहारा लेना चाहिए। हम सभी को मिलकर ही बिजली को बचाने के लिए कदम उठाना होगा।

- राजेश पी जोशी
क्षेत्रीय राजभाषा अधिकारी एवं
क्षेत्रिय विद्युत अभियंता /रत्नागिरी

भारतीय संस्कृति

'भारतीय संस्कृति' विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी कहा जाता है। जीने की कला हो या विज्ञान और राजनीति का क्षेत्र, भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ-साथ नष्ट होती रही हैं, किन्तु भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है। विश्व के सभी क्षेत्रों और धर्मों की अपने रीति-रिवाज़ों, परम्पराओं और परिष्कृत गुणों के साथ अपनी संस्कृति है। भारतीय संस्कृति स्वाभाविक रूप से शुद्ध है जिसमें प्यार, सम्मान, दूसरों की भावनाओं का मान-सम्मान और अहंकार रहित व्यक्तित्व अन्तर्निहित है। भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों, जीवन मूल्यों और वचन पद्धति में एक ऐसी निरन्तरता रही है कि आज भी करोड़ों भारतीय स्वयं को उन मूल्यों एवं चिन्तंन प्रणाली से जुड़े हुए महसूस करते हैं|

भौगोलिक दृष्टि से भारत विविधताओं का देश है, फिर भी सांस्कृतिक रूप से एक इकाई के रूप में इसका अस्तित्व प्राचीनकाल से बना हुआ है। भौगोलिक विभिन्नता के अतिरिक्त इस देश में आर्थिक और सामाजिक भिन्नता भी पर्याप्त रूप से विद्यमान है। वस्तुत: इन भिन्नताओं के कारण ही भारत में अनेक सांस्कृतिक उपधाराएँ विकसित होकर पल्लवित और पुष्पित हुई हैं। म, कृष्ण और शिव की आराधना यहाँ सदियों से की जाती रही है। भारत की सभी भाषाओं में इन देवताओं पर आधारित साहित्य का सृजन हुआ है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण भारत में जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार एक समान प्रचलित हैं। विभिन्न रीति-रिवाज, आचार-व्यवहार और तीज - त्यौहारों में भी समानता है। भाषाओं की विविधता अवश्य है फिर भी संगीत, नृत्य और नाट्य के मौलिक स्वरूपों में आश्चर्यजनक समानता है। संगीत के सात स्वर और नृत्य के त्रिताल सम्पूर्ण भारत में समान रूप से प्रचलित हैं। भारत अनेक धर्मों, सम्प्रदायों, मतों और पृथक आस्थाओं एवं विश्वासों का महादेश है।

अलग परिवारों, जातियों, उप-जातियों और धार्मिक समुदाय में जन्म लेने वाले लोग एकसाथ शांतिपूर्वक एक समूह में रहते हैं। यहाँ लोगों का सामाजिक जुड़ाव लंबे समय तक रहता है। अपनी तारतम्यता और सम्मान की भावना, इज़्ज़त और एक-दूसरे के अधिकार के बारे में अच्छी भावना रखते हैं। अपनी संस्कृति के लिये भारतीय लोग अत्यधिक समर्पित रहते हैं और सामाजिक संबंधों को बनाए रखने के लिये अच्छे व्यवहार को जानते हैं। भारत में विभिन्न धर्मों के लोगों की अपनी अपनी संस्कृति और परंपरा होती है। उनके अपने त्योहार और मेले होते हैं जिसे वो अपने तरीके से मनाते हैं। कई सारे युग आये और गये लेकिन कोई भी इतना प्रभावशाली नहीं हुआ कि वो हमारी वास्तविक संस्कृति को बदल सके। हमारी राष्ट्रीय संस्कृति हमेशा हमें अच्छा व्यवहार करना, बड़ों की सम्मान करना, मजबूर लोगों की मदद करना सिखाती है।

दिलीप द. भट

वरिष्ठ क्षेत्रीय यातायात प्रबंधक,रत्नागिरी

राजभाषा नियम - 1976 का नियम - 10

नियम 10. हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

1)(क) यदि किसी कर्मचारी ने-
(i) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या
(ii) केन्द्रीय सरकार की हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
(iii)केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या
(ख)यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लियाहै; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(2) यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसाज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

(3) केन्द्रीय सरकार या केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अधिकारी यह अवधारित कर सकता है कि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय के कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है या नहीं।

(4) केन्द्रीय सरकार के जिन कार्यालयों में कर्मचारियों ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएंगे;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार की राय है कि किसी अधिसूचित कार्यालय में काम करने वाले और हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों का प्रतिशत किर्स तारीख में से उपनियम (2) में विनिर्दिष्ट प्रतिशत से कम ह गया है, तो वह राजपत्र में अधिसूचना द्वारा घोषित क सकती है कि उक्त कार्यालय उस तारीख से अधिसूचि कार्यालय नहीं रह जाएगा।

विद्युत सुरक्षा

किसी भी सुविधा में, सबसे आम तौर पर ,सामने आने वाले, खतरों में से एक, बिजली है |

बिजली के साथ काम करना खतरनाक हो सकता है। इंजीनियर, इलेक्ट्रीशियन और अन्य पेशेवर ,सीधे बिजली के साथ काम करते हैं, जिसमें ओवरहेड लाइन, केबल हार्नेस और सर्किट असेंबली पर काम करना शामिल है। अप्रत्यक्ष रूप से बिजली के साथ काम करने वाले कार्यालय कर्मचारी और बिक्री व्यक्ति जैसे अन्य लोग भी बिजली के खतरों के संपर्क में आ सकते हैं।

कई कर्मचारी अपने कार्य वातावरण में मौजूद ,संभावित विद्युत खतरों से ,अनजान हैं, जो उन्हें बिजली के झटके के खतरे के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है। विद्युत कार्य से जुड़ी चोट के जोखिम को कम करने या समाप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के संभावित समाधान लागू किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए इन्सुलेशन, गार्डिंग, ग्राउंडिंग, विद्युत सुरक्षा उपकरणों और सुरक्षित कार्य प्रथाओं का उपयोग शामिल है। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विद्युत उपकरणों की स्थापना, रखरखाव या मरम्मत एक लाइसेंस प्राप्त इलेक्ट्रीशियन द्वारा की जानी चाहिए। साथ ही विद्युत सुरक्षा प्रशिक्षण ,आपके कर्मचारी को, कार्यसफल होने की विशेषज्ञता प्रदान करेगा।

विद्युतीय खतरा

बिजली के खतरों से लगने वाली चोटें मुख्य रूप से 4 प्रकार की होती हैं

बिजली का झटका (Electrocution)(घातक)

विद्युत का झटका (shock)

बर्न्स

विद्युत ऊर्जा के संपर्क के परिणामस्वरूप गिरना

कुछ सामग्रियों में बिजली दूसरों की तुलना में अधिक आसानी से प्रवाहित होती है। सामान्य लेकिन शायद अनदेखा किया गया कंडक्टर पृथ्वी की सतह या उपसतह है। वायु संवाहक बन सकती है जैसा कि चाप या बिजली के झटके के दौरान होता है। अशुद्धियों वाला पानी बिजली का अच्छा संवाहक है| नम या गीले वातावरण में बिजली के साथ काम करने वाले किसी भी व्यक्ति को बिजली के खतरों को रोकने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है। बिजली सामान्यतः कंडक्टर के माध्यम से बंद सर्किट में यात्रा करती है लेकिन कभी-कभी किसी व्यक्ति का शरीर गलती से विद्युत सर्किट का हिस्सा बन जाता है।

इससे बिजली का झटका लग सकता है. झटके तब लगते हैं जब किसी व्यक्ति का शरीर करंट पथ को पूरा करता है

1. विद्युत परिपथ के दोनों तार

2. ऊर्जावान सर्किट का एक तार और जमीन
3. धातु का भाग जो टूट जाने के कारण आकस्मिक रूप से सक्रिय हो जाता है या
4. एक अन्य कंडक्टर जो करंट प्रवाहित करता है जब व्यक्ति को झटका लगता है, तो बिजली शरीर के एक हिस्से के बीच या शरीर से होते हुए जमीन तक प्रवाहित होती है। बिजली के झटके से हल्की झुनझुनी से लेकर तत्काल हृदय गति रुकने तक कुछ भी हो सकता है। बिजली के झटके कभी-कभी व्यक्ति का चिपकनेका कारण बनते हैं जिससे व्यक्ति सर्किट से मुक्त होने में असमर्थ हो जाता है। बिजली के झटके से गंभीर जलन हो सकती है। गंभीरता निम्नलिखित पर निर्भर करती है

* शरीर में प्रवाहित होने वाली धारा की मात्रा
* शरीर के माध्यम से धारा का पथ
* शरीर के सर्किट में रहने की अवधि
* धारा की फ्रिक्वेन्सी

यदि झटके से विस्तारक मांसपेशियां उत्तेजित हो जाती हैं, तो व्यक्ति शक्ति स्रोत से दूर जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति विद्युत संपर्क से "जमा हुआ" है, तो तुरंत करंट बंद कर दें। यदि यह संभव नहीं है, तो लकड़ी या किसी अन्य बिना चालक सामग्री से बने बोर्ड, खंभे या छड़ियों का उपयोग करें और व्यक्ति को सुरक्षित रूप से धक्का दें या संपर्क से दूर खींचें। शीघ्रता से कार्य करना महत्वपूर्ण है, लेकिन अपने आप को बिजली के झटके से भी बचाना याद रखें।

झटके और जलने के खतरों के अलावा, बिजली अन्य खतरे भी पैदा करती है, जैसे शॉर्ट सर्किट के परिणामस्वरूप होने वाले आर्क से चोट लग सकती है या आग लग सकती है। उच्च ऊर्जा आर्क उपकरणों को नुकसान पहुंचा सकते हैं जिससे खंडित धातु सभी दिशाओं में उड़ सकती है। यहां तक कि कम ऊर्जा वाले चाप भी वायुमंडल में हिंसक विस्फोट का कारण बन सकते हैं जिनमें ज्वलनशील गैसें, वाष्प आदि होते हैं|

अधिकांश विद्युत दुर्घटनाएँ किसके परिणामस्वरूप होती हैं?

1 असुरक्षित उपकरण या स्थापना।
2 असुरक्षित वातावरण या
3 असुरक्षित कार्य प्रथाएँ।
दुर्घटनाओं को रोकने के कुछ तरीके इन्सुलेशन, गार्डिंग, ग्राउंडिंग, विद्युत सुरक्षात्मक उपकरणों और सुरक्षित कार्य प्रथाओं के उपयोग के माध्यम से हैं। धातुओं और अन्य कंडक्टरों को कोट करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले कांच, अभ्रक, रबर या प्लास्टिक जैसे "इंसुलेटर" बिजली के प्रवाह को रोकने या कम करने में मदद करते हैं। मौजूदा इससे झटके, आग और शॉर्ट सर्किट को रोकने में मदद मिलती है। इन्सुलेशन ,उपयोग किए गए वोल्टेज,तापमान ,और ,नमी, तेल आदि जैसे अन्य पर्यावरणीय घटकों के लिए उपयुक्त और प्रभावी होना चाहिए जो इंसुलेटर के विफल होने का कारण बन सकते हैं।

विद्युत उपकरणों को बिजली स्रोत से जोड़ने से पहले संभावित प्रभावों के लिए किसी भी खुले तार के

इन्सुलेशन की जांच करना एक अच्छा विचार है। एक्सटेंशन तार विशेष रूप से क्षति के प्रति संवेदनशील होते हैं। "सुरक्षा" में विद्युत उपकरण का पता लगाना या उसे घेरना शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लोग गलती से इसके जीवित हिस्सों के संपर्क में न आएँ। लोगों को बिजली के खतरे के प्रति सचेत करने और अनधिकृत लोगों के प्रवेश पर रोक लगाने के लिए विद्युत कक्षों और समान स्थानों के प्रवेश द्वारों पर विशिष्ट संकेत लगाए जाने चाहिए। संकेतों में "खतरा", "चेतावनी", "सावधानी" शब्द शामिल हो सकते हैं या "खतरा/उच्च वोल्टेज/दूर रहें" आदि जैसे निर्देश दिए जा सकते हैं।

किसी उपकरण या विद्युत प्रणाली को "ग्राउंडिंग" करने का अर्थ जानबूझकर एक कम प्रतिरोध पथ बनाना है जो पृथ्वी से जुड़ता है। यह वोल्टेज के निर्माण को रोकता है जो विद्युत दुर्घटना का कारण बन सकता है। यह बिजली के झटके से बचाने के लिए एक द्वितीयक सुरक्षात्मक उपाय है। एक ग्राउंड उपकरण ,उपकरण ऑपरेटर की सुरक्षा में मदद करता है। यह उपकरण या मशीन से जमीन तक करंट प्रवाहित करने के लिए दूसरा मार्ग प्रदान करता है। यदि किसी खराबी के कारण उपकरण का धातु फ्रेम सक्रिय हो जाता है तो यह अतिरिक्त ग्राउंड ऑपरेटर की सुरक्षा करता है। धारा का परिणामी प्रवाह, सर्किट सुरक्षा उपकरणों को सक्रिय कर सकता है।
"सर्किट सुरक्षा उपकरण" (circuit protection devices) ग्राउंड फॉल्ट, ओवरलोड या वायरिंग सिस्टम में शॉर्ट सर्किट की स्थिति में करंट के प्रवाह को स्वचालित रूप से सीमित या बंद कर देते हैं। इन उपकरणों के प्रसिद्ध उदाहरण फ़्यूज़, सर्किट ब्रेकर, ग्राउंड-फ़ॉल्ट सर्किट इंटरप्टर और आर्क फॉल्ट सर्किट इंटरप्टर हैं।

सुरक्षित कार्य पद्धतियाँ --

1. निरीक्षण या मरम्मत से पहले बिजली के उपकरणों को डी-एनर्जेट करना
2. बिजली के उपकरणों का उचित रख-रखाव करना
3. ऊर्जावान लाइनों के पास काम करते समय सावधानी बरतें
4. उचित सुरक्षात्मक उपकरणों का उपयोग करना
5. धातु के उन हिस्सों से बचाव करें जो ऊर्जावान हो जाते हैं।
6. आकस्मिक या अप्रत्याशित उपकरण स्टार्ट होने से रोकें
7. अपने आप को ओवरहेड बिजली लाइनों से बचाएं
8. कार्य निष्पादन के लिए आवश्यक व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों का उपयोग करें
9. कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करें.

चूंकि बिजली को लंबे समय से एक गंभीर, कार्यस्थल खतरे के रूप में मान्यता दी गई है, जिससे कर्मचारियों को बिजली के झटके, जलन, आग और विस्फोट का सामना करना पड़ता है, हम कह सकते हैं -

" KNOW SAFETY , NO PAIN
NO SAFETY, KNOW PAIN "

सुधा पंडित
क्षेत्रीय प्रबन्धक (सू.प्रौ.)/ रत्नागिरी

विश्व हिंदी दिवस: हिंदी भाषा का गौरव

विश्व में हिंदी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने तथा हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से "विश्व हिंदी सम्मेलनों" की शुरुआत की गई और प्रथम "विश्व हिन्दी सम्मेलन" 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया। इसके उपलक्ष्य में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी ने 10 जनवरी, 2006 को प्रति वर्ष 10 जनवरी को "विश्व हिन्दी दिवस" के रूप मनाए जाने की घोषणा की थी। तदनुसार भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में 10 जनवरी, 2006 को पहली बार विश्व हिन्दी दिवस मनाया था। तब से "विश्व हिंदी दिवस" प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

आइए अब विश्व में हिन्दी के प्रसार के बारे में जानकारी लेते हैं। यूएन (संयुक्त राष्ट्र) के अनुसार पूरे विश्व में बोली जाने वाली कुल भाषाएँ 6809 हैं और इनमें से सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा मंडारिन है जो कि चीन की राजकीय भाषा भी है। इसके बाद स्थान आता है हिंदी का। भारत और विदेश में लगभग 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं और इस भाषा को समझने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग 90 करोड़ है। हिंदी भाषा का मूल प्राचीन संस्कृत भाषा में है। इस भाषा ने अपना वर्तमान स्वरूप कई शताब्दियों के पश्चात प्राप्त किया है। बड़ी संख्या में बोलीगत विभिन्नताएं आज भी मौजूद हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी है, जो कि कई अन्य भारतीय भाषाओं के लिए संयुक्त है। हिंदी के अधिकतम शब्द संस्कृत से आए हैं। इसका व्याकरण की भी संस्कृत भाषा के समान है।

उल्लेखनीय है कि सभी प्रधान भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत है। एक समय संस्कृत विश्व पर राज करती थी।संस्कृत का ज्ञान अर्जन करने के लिए पूरे विश्व के लोग तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे भारतीय विश्वविद्यालयों में आते थे। साहित्यकार आरूणि त्रिवेदी के अनुसार इस बात के कई प्रमाण हैं कि विश्व के बहुत से देशों के बीच संपर्क भाषा के रूप में संस्कृत न सिर्फ प्रमुख थी बल्कि यह अन्य भाषाओं के तकनीकी शब्दों को भी प्रभावित कर चुकी थी। संस्कृत भारत में प्रचलित अंक विद्या, दशमलव प्रणाली, आयुर्विज्ञान, रसायन और भेषज विज्ञान, गणित, भूगोल, खगोल विज्ञान और ज्योतिषशास्त्र के शब्द भारत से फारस, अरब, तुर्क और यूनान होते हुए यूरोप तक पहुंचे। संस्कृत के मातृ, पितृ और भ्रातृ से परिवर्तित हो कर मदर, फादर और ब्रदर हो गए। 'अ' से अलिफ और अलिफ से अल्फा बना। एक बृहत्तर भारत भी था जिसका स्तर आज के खाड़ी देशों से लेकर ईरान, अफगानिस्तान, बर्मा, थाईलैंड, सिंगापुर (सिंहपुर), इंडोनेशिया (हिंदेशिया) तक था। आज भी इन देशों के लोगों के नाम भारतीयों के समान हैं जैसे इंडोनेशिया की नेत्री मेघावती सुकर्णोपुत्री, श्रीलंका के क्रिकेटर अरविंद और अर्जुन रणतुंग वगैरह। पूर्वी एशिया के अनेक देशों के नाम तक भारतीय हैं- सुमात्रा, जावा (जो संस्कृत शब्द यव से बना है) मलय (जो रोमन लिपि के भाव से मलाया हो गया), कुंभोज (अंग्रेजी के प्रभाव के कारण कंबोडिया हो गया)। जर्मनी के

कुछ छात्र इसलिए संस्कृत सीखते हैं कि संस्कृत सीखने के बाद विश्व की कोई भी भाषा सीखना आसान हो जाता है। संस्कृत को कंप्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा माना गया है। एक यूरोपीय यात्री जो 12 वीं शताब्दी में भारत से होकर गुजरा था, उसने अपनी डायरी में लिखा है कि मैं हिंदवी भाषा जानता हूं अत: मुझे ईरान से लेकर हिन्देशिया तक भाषा की कोई समस्या नहीं होगी क्योंकि मुझे प्रत्येक स्थान पर हिन्दवी बोलने और समझने वाले मिल जाएंगे अर्थात आज से करीब 900 साल पहले हिंदी इस विश्व में व्याप्त थी और आज भी व्याप्त है। टीवी चैनलों पर संगीत की प्रतियोगिताओं वाले कार्यक्रम और महिलाओं के धारावाहिक विश्व भर में देखे जा रहे हैं। मीडिया का सूचना संसार हिंदी का भक्त है।

आज हिंदी विश्व के लगभग पचपन देशों में फैले पचास करोड़ से अधिक लोगों की अभिव्यक्ति की भाषा बन गई है। बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि भारत के पड़ोसी देशों में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में फैलती जा रही है। विश्व के दो सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी के भाषाई और साहित्य पर शिक्षण एवं अनुसंधान हो रहा है। सुप्रसिद्ध लेखक अच्युतानंद मिश्र एक लेख में बताते हैं कि हिंदी में व्याकरण लेखन की शुरूआत डच के एक विद्वान 'जोशुआ केटलियर' ने 1695-98 में लखनऊ में की थी। वर्ष 1744 में बेंज़ामिन शुल्तज ने 'ग्रामेटका हिंदोस्तानिका' पुस्तक लिखी थी। यह पुस्तक लैटिन भाषा में थी। 1773 में जॉनफ़ग्र्यूसन की 'हिंदुस्तानी डिक्शनरी' प्रकाशित हुई। गिलक्रिस्ट ने 1787 -1796 के बीच कोलकाता में 'हिंदुस्तानी कोश' तैयार किया था। 12 अगस्त, 1881 का जो आदेश लंदन से सेक्रेटरी सिविल सर्विसेज़ कमीशन को भेजा गया उसके अनुसार भारत आने वाले अंग्रेजों को हिंदी मैन्युअल पढ़ना और हिंदी की परीक्षा पास करना अनिवार्य था। सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया' (भारत का भाषा सर्वेक्षण) जैसा विशाल ग्रंथ तैयार किया था, उस समय की सरकार ने 1927 में 11 खंडों में इसका प्रकाशन किया था। ये तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि हिंदी विश्व के मानचित्र में अपनी उपस्थिति सशक्त ढंग से दर्ज़ करा रही थी। इसके ज़रिये भारतीय संस्कृति भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज़ करा रही थी और करा रही है। आज विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत, योग सीखने के लिए हिंदी का माध्यम अपना रहे हैं।

हिंदी को लेकर विदेशियों में भी भारत की संस्कृति को समझने की रुचि बढ़ी है। यही कारण है कि कई देशों ने अपने यहाँ भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षण केंद्रों की स्थापना की है।भारतीय धर्म, इतिहास और संस्कृति पर विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित करने के अलावा इन केंद्रों में हिंदी, उर्दू और संस्कृत जैसी कई भारतीय भाषाओं में भी पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। वैश्वीकरण और निजीकरण के इस परिदृश्य में अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते व्यापारिक संबंधों को देखते हुए संबंधित व्यापारिक साझेदार देशों की भाषाओं की अन्तर - शिक्षा की जरूरत महसूस की जाने लगी है।इस विवरण ने अन्य देशों में हिंदी को लोकप्रिय और सरलता से सीखने योग्य भारतीय भाषा बनाने में काफी योगदान किया है। अमरीका में कुछ स्कूलों में फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन के साथ-साथ हिंदी को भी विदेशी भाषा के रूप में शुरू करने का फैसला किया गया है। न्यूयार्क में हिंदी शिक्षण के लिए अनुदान स्वीकृत हुआ है। टेक्सास के बलैटे हाई स्कूल में 'नमस्ते जी' पाठ्य पुस्तक बेहद लोकप्रिय हो रहा है। आस्ट्रेलिया के सरकारी स्कूलों में मेल्बर्न का रेंजबेंक प्राइमरी स्कूल विक्टोरियन प्रदेश का पहला स्कूल है जिसने अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी को अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाने की स्वीकृति दी है जहां लगभग 500 से अधिक बच्चे हिंदी सीख रहे हैं।इसे देखते हुए ऐसा लगता है कि हिंदी ने भाषा-विषयक कार्य-क्षेत्र में स्वयं के लिए एक वैश्विक मान्यता अर्जित कर ली है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति, मुक्त बाज़ार की आर्थिक नीतियां और वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में आज विश्व के मानचित्र पर जो नए भाषाई समीकरण उभर रहे हैं उसमें हिंदी अपनी क्षमता का परिचय दे रही है। भूमंडलीकरण के परिवेश में भाषाओं ने सभी का ध्यान आकर्षित किया है। ज्ञान, सृजन, व्यापार, व्यवसाय, साहित्य-संस्कृति को बढ़ाने के लिए अब हिंदी भी एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभर रही है।

वैश्वीकरण की विभिन्न प्रक्रियाओं के विस्फोट और प्रमुख भाषाओं के बीच अब सांस्कृतिक सामंजस्य और सौहार्द बढ़ रहा है, यह एक शुभ संकेत है। इससे भाषाई, साहित्यिक-सामाजिक आदान-प्रदान और आवश्यकता की संभावनाएं बढ़ गई हैं। यही कारण है कि आज अमरिका, जर्मनी, चीन जैसे देश हिंदी सीखने के लिए प्रयासरत हैं। कदाचित ये भारत को बाज़ार के रूप में देखते हैं इसलिए भी हिंदी सीख रहे हैं। बाज़ार हिंदी की जयघोष का शंखनाद कर रहा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां जॉनसन एंड जॉनसन, लार्सन एंड टूब्रो, कोलगेट, कोको कोला जैसी सैकड़ों कंपनियां अपना उत्पाद बेचने के लिए हिंदी का सहारा ले रही है, वे जानती है कि हिंदी एक शक्ति है, उसी के माध्यम से हिंदी जनता तक पहुंचा जा सकता है। कितनी बड़ी ताकत है हिंदी की, जिसके कारण वह विश्व में अपना परचम फहरा रही है।

आज यह बात महत्वपूर्ण है कि मॉरीशस के प्रथम प्रधानमंत्री डॉ. सर शिवसागर (जो मॉरीशस के राष्ट्रपिता के रूप में जाने जाते हैं) ने 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि 'हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, लेकिन हमारे लिए इस बात का अधिक महत्व है कि यह एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है'। आज वह बात पूर्णता: सिद्ध हो रही है। सबको यह सर्वसम्मति से मानना चाहिए कि हिंदी का इतिहास तो गौरवमयी है ही पर उसका भूगोल तेजी से अंतर्राष्ट्रीय रूप लेता जा रहा है। अब हिंदी भाषा नहीं रही, वह जीने की ग्लोबल शैली बनती जा रही है। एक समय था जब विश्व में ब्रिटिश राज्य का सूरज डूबता नहीं था। आज दुनिया में हिंदी का सूरज नहीं डूबता है। यदि हिंदी का यह जादू नहीं होता तो क्या गुगल, विकिपीडिया लाखों पृष्ठ हिंदी में देता। हिंदी की गरिमा और महिमा दोनों बढ़ रही है। वह अब सांस्कृतिक, सामाजिक आत्मीयता रचने का माध्यम बन रही है और जिंदगी का हिस्सा बन रही है।

देश को एकता की माला में पिरोने वाली हिंदी,
समूचे विश्व में सद्भाव और मैत्री की भावना को दृढ़ करें,
'वसुधैव कुटुंबकम्' की लक्ष्य प्राप्ति के लिए,
ओजस्वी शक्ति के रूप में स्वयं को प्रतिष्ठित करें ।

सदानंद चितळे
राजभाषा अधिकारी
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भविष्य में इन्सानों के लिए शाप या वरदान?

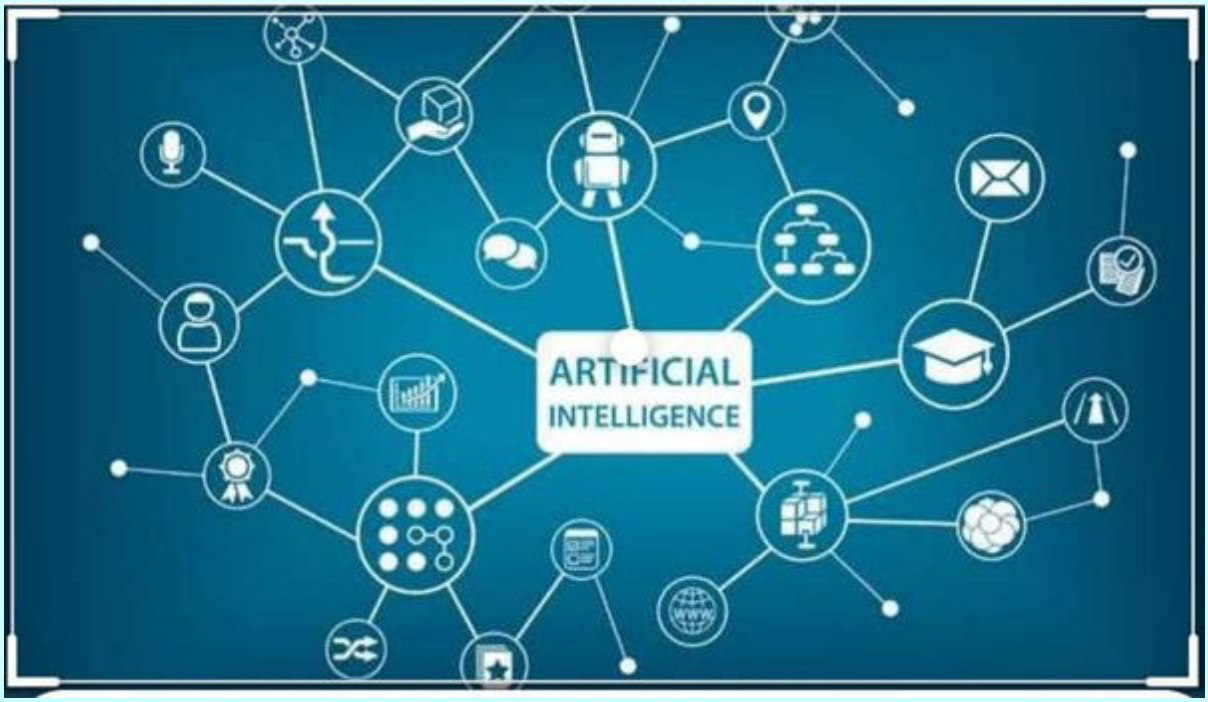

आजकल विज्ञान और तकनीक बिल्कुल नए स्तर पर पहुंच गई है, क्योंकि आज वो सब कुछ संभव हो गया है जिसके बारे में एक सदी पहले तक इंसान ने सोचा भी नहीं था। कुछ स्पष्ट उदाहरण बुलेट ट्रेन, उपग्रह आदि हैं। जब उज्ज्वल उभरती प्रौद्योगिकियों की बात आती है, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसा नाम है जिसे गिना जाना चाहिए। एआई के अनुप्रयोगों में मानव-स्तर की बुद्धिमत्ता का अनुकरण करने की क्षमता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के फायदे :

1. हम इंसान अक्सर अनजाने में गलतियाँ करते हैं, जिसका खामियाजा हमें बाद में भुगतना पड़ता है। हालाँकि, AI-संचालित मशीनों के मामले में ऐसा नहीं है, क्योंकि एक बार जब उन्हें सटीक डेटा मिल जाता है, तो वे सटीकता की मात्रा निर्धारित करते हैं।
2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शुरुआत के बाद चिकित्सा क्षेत्र को भारी लाभ मिल रहा है। एआई के माध्यम से, डॉक्टर न केवल स्वास्थ्य जोखिमों को सीखते हैं बल्कि विभिन्न दवाओं के दुष्प्रभावों से भी पूर्णतः ज्ञात होते हैं। इसके अलावा, एआई-संचालित मशीनें सर्जरी के दौरान मदद करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप सफलता दर अधिक होती है। संक्षेप में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता चिकित्सा क्षेत्र पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही है।
3. मनुष्य केवल अपने लाभ के लिए प्रौद्योगिकी से जुडने का प्रयास करता है; इसका मतलब है कि हम ऐसी तकनीक चाहते हैं जो हमारे जीवन को आसान बना दे। एआई इन दिनों यही कर रहा है। हम केवल एक वॉइस कमांड देकर इंटरनेट से वांछित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह सब एआई-पावर्ड वॉयस

असिस्टेंट जैसे सिरी, कोरटाना, एलेक्सा आदि की बदौलत होता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक और लाभ यह है कि यात्रा संबंधी समस्याएं काफी हद तक कम हो जाती हैं। अब हम तनाव-मुक्त लंबी ड्राइव पर जा सकते हैं, जीपीएस लगभग हमेशा मदद के लिए मौजूद रहता है। इसके अलावा, आप एआई-आधारित चेहरे की पहचान तकनीक की बदौलत सटीक तस्वीरें क्लिक कर सकते हैं, अत्यधिक सुरक्षित बैंकिंग कर सकते हैं, निर्बाध ऑनलाइन शॉपिंग का आनंद ले सकते हैं आदि।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नुकसान :

1. एआई तकनीकी आधारित सामग्री एवं सुविधाएं आज की तारीख में अधिक कीमत के साथ उपलब्ध हो रही है। इससे सामान्य से सामान्य व्यक्ति इससे पूरी तरह से जुड़ नहीं पाया है और न हीं इसे आसान तरीके से अपना रहा है। एआई उपकरण या तकनीक की लागत अधिक होने के कई कारण है। एआई की भारी कीमत के पीछे मुख्य कारण इसका जटिल एल्गोरिदम है। साथ ही, कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संचालित मशीनों की मरम्मत और रखरखाव की लागत भी बहुत अधिक है। एआई-संचालित मशीनों की लागत समय के साथ कम हो रही है, हालांकि कम मार्जिन या कम प्रारंभिक पूंजी वाले व्यवसायों में एप्लिकेशन लाना अभी भी मुश्किल है।

2. एक कारक जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए दोधारी तलवार के रूप में कार्य करता है वह यह है कि यह केवल उसी वातावरण में ठीक से काम करता है जिसके लिए इसे प्रोग्राम किया गया है। इसका मतलब है कि एआई-आधारित आवेदक अपरिचित परिस्थितियों में निर्णय नहीं ले सकते, जो बेहद अस्वीकार्य है। संक्षेप में, मनुष्यों के विपरीत, एआई वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है।

3.क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता बेरोजगारी का कारण बन सकती हैं?' यह निश्चित रूप में बहस का एक अच्छा विषय हो सकता है। क्योंकि कुछ लोग का यह मानना हैं कि यह सिर्फ एक मिथक है जबकि कुछ लोग यह कहते है कि ए.आई. नई नौकरियां पैदा करता है। लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से यह बेरोजगारी भी निर्माण कर रहा है। एआई-आधारित मशीनें इंसानों की जगह ले रही हैं जहां दोहराए जाने वाले कार्य सबसे अच्छे तरीके से किए जाते हैं। संक्षेप में, एआई-संचालित एप्लिकेशन उन लोगों के लिए खतरा हैं जो श्रम-केंद्रित कार्य करते हैं या गैर-प्रबंधकीय पदों पर कार्य करते हैं।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, इसलिए कुछ नुकसानों के कारण कृत्रिम बुद्धिमत्ता के महत्व को नकारने का कोई मतलब नहीं है। यह सब इस पर निर्भर करता है कि हम चीजों को कैसे देखते हैं। इसलिए, कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव जाति के लिए लाभ या हानि दोनों हो सकती है। हालाँकि, यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि समय के साथ एआई में सुधार होता है, इस प्रकार निकट भविष्य में इसके सभी व्यवहारों में जीत हासिल करने की संभावना है। हालाँकि, यह कहना गलत है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग अब की तुलना में अधिक प्रभावी होंगे।पिछले कुछ वर्षों में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमेशा विभिन्न कारणों और मुद्दों के कारण खबरों में रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कंप्यूटर विज्ञान की एक शाखा है जो बुद्धिमान मशीनें बनाने से संबंधित है। हॉलीवुड में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्टार वार्स, आई रोबोट, टर्मिनेटर, ब्लेड रनर आदि फिल्में बन चुकी हैं, क्या आप सोच सकते हैं कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्या है? प्रसिद्ध भारतीय अभिनेता रजनीकांत की फिल्म 'रोबोट' में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कमाल को देखा जा सकता है। इसके अलावा कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाले कंप्यूटर सिस्टम ने 1997 में रूस के गैरी कास्परोव को भी हरा दिया था।

मौजूदा दौर को कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर प्रयोगों का दौर कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के महत्वपूर्ण उपयोग

कंप्यूटर गेमिंग

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण

विशेषज्ञ प्रणाली

व्हिजन सिस्टम

वाक् पहचान

स्मार्ट रोबोट

इसके अलावा, एक बहुत ही जटिल प्रणाली चलाना, नई दवाएं बनाना, नए रसायनों की खोज करना खनन से लेकर अंतरिक्ष तक, शेयर बाजार से लेकर बीमा कंपनियों तक, मानव जीवन का कोई अन्य क्षेत्र नहीं बचा है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता में हस्तक्षेप नहीं करता है।

इसका मतलब यह है कि जिस काम में इंसान को बहुत अधिक समय लगता है या जो काम जटिल और कठिन होता है उसे इस यांत्रिक मस्तिष्क की मदद से किया जा सकता है। इस प्रकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इंसानों के लिए एक वरदान है।

- सतीश धुरी

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, मडगांव

चिनाब पूल का निर्माण एवं विशेषताएं

उधमपुर - श्रीनगर - बारामूला रेल लिंक (यूएसबीआरएल) परियोजना एक राष्ट्रीय परियोजना है, जो देश के बाकी हिस्सों से कश्मीर की खूबसूरत घाटी तक रेल कनेक्टिविटी प्रदान करता है। इस परियोजना का एक हिस्सा कटरा-धरम 30.00 किमी से 72.390 किमी और 91.200 किमी से 101.635 किमी तक कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड को सौंपा गया है। इसमें 44.59 किमी (85.5%) मार्ग सुरंगों में, 4.6 किमी (8.8%) मार्ग पुलों पर और (5.7%) मार्ग कटिंग और तटबंधों में शामिल है। कोंकण रेलवे ने सड़क सुरंगों सहित 172 किमी लंबी सड़कें और अस्थायी पुल बनाया है।

परियोजना को तेजी से क्रियान्वित करने के लिए कोंकण रेलवे ने प्रोजेक्ट हेड ऑफिस जम्मू में बनाया है।इसके लिए कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने लगभग 354 कर्मचारियों और इंजीनियरों की एक टीम जुटाई है और डिज़ाइन समर्थन के लिए, विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां हैं।चिनाब रेल ब्रिज एक स्टील और कंक्रीट का आर्च ब्रिज है जो भारत के जम्मू और कश्मीर के जम्मू डिवीजन के रियासी जिले में बक्कल और कौरी के बीच स्थित है। यह ब्रिज चिनाब नदी पर 359 मीटर (1,178 फीट) की ऊंचाई पर बना हुआ है। चिनाब रेलवे पूल पेरिस के एफिल टॉवर से भी ऊंचा, दुनिया का सबसे ऊंचा सिंगल-आर्क रेलवे पुल है। नवंबर 2017 में, मुख्य मेहराब के निर्माण की शुरुआत के लिए आधार समर्थन को पूरा घोषित कर दिया गया था। पुल पूरी तरह से बनकर तैयार हो गया और अगस्त 2022 में इसका उद्घाटन किया गया।

पुल के मुख्य तकनीकी डेटा में शामिल हैं:

- डेक की ऊंचाई: नदी तल से ऊपर - 359 मीटर, नदी की सतह से ऊपर - 322 मीटर है ।
- पुल की लंबाई: 1,315 मीटर, जिसमें उत्तरी तरफ 650 मीटर लंबा पुल भी शामिल है ।
- आर्क अवधि: 467 मीटर है ।
- मेहराब की लंबाई: 480 मीटर है।

इससे चिनाब रेल ब्रिज बनता है:

* चिनाब नदी घाटी के नदी तल से 359 मीटर की ऊँचाई पर, प्रतिष्ठित चिनाब पूल दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे पूल है।
* यह पूल प्रतिष्ठित एफिल टावर से 35 मीटर ऊंचा है।
* दुनिया का 16 वां सबसे ऊंचा पुल ।
* दुनिया का 11 वां सबसे लंबा आर्च ब्रिज ।

फीट 6 इंच (1,676 मिमी) ब्रॉड गेज रेलवे नेटवर्क में सबसे लंबे विस्तार वाला पुल ।

डिजाइन और निर्माण का काम आईआईएससी बैंगलोर की मदद से भारत के तीसरे सबसे बड़े निर्माण

समूह, शापूरजी पल्लोनजी समूह के एक हिस्से, एफकॉन्स इंफ्रास्ट्रक्चर को सौंपा गया था। कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन द्वारा प्रमुख निर्माण निर्णय लिए गए। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) ने पुल के डिजाइन में मदद की, इसे विशेष स्टील का उपयोग करके ब्लास्ट-प्रूफ बनाया गया।

पुल निर्माण योजना अपने आप में एक परियोजना है। नदी के दोनों किनारों पर दो तोरण (लगभग 130 मीटर और 100 मीटर ऊंचे) खड़े किए गए थे, और इन तोरणों के पार अस्थायी सहायक रस्सियों को खींचने के लिए दो सहायक स्व-चालित केबल क्रेन (प्रत्येक 20 टन की क्षमता) का उपयोग किया गया था। रस्सियों का उपयोग आंशिक रूप से तैयार मेहराब भागों को सहारा देने के लिए किया गया था। आर्च पूरा होने के बाद, ट्रस जोड़े जाएंगे, अंत में गर्डर का निर्माण क्षैतिज स्लाइडिंग प्रकार के प्लेटफॉर्म के रूप में किया जाएगा।

नदी के ऊपर 359 मीटर (1,178 फीट) की ऊंचाई पर निर्मित, चिनाब पुल ने कथित तौर पर अब तक सभी आवश्यक परीक्षण पास कर लिए हैं - जिसमें उच्च-वेग हवाओं का परीक्षण, अत्यधिक तापमान परीक्षण, भूकंप-प्रवण परीक्षण और वृद्धि के कारण जल विज्ञान संबंधी प्रभाव शामिल हैं। जल स्तर में. एएनआई के मुताबिक, एक बार पूरा हो जाने पर, चिनाब रेलवे ब्रिज 260 किमी प्रति घंटे की गति वाली हवाओं का सामना करने में सक्षम होगा और इसका जीवनकाल 120 साल होगा।

जम्मू और कश्मीर के लोगों के लिए, यह पुल दो दशकों के लंबे इंतजार के बाद आया है। अपनी पहली मंजूरी मिलने के बाद परियोजना कई समय सीमा से चूक गई है। अप्रैल 2021 में, चिनाब रेल ब्रिज का आर्क पूरा हो गया और समग्र पुल अगस्त 2022 में पूरा हो गया। इसके दिसंबर 2023 या जनवरी/फरवरी 2024 तक रेल यातायात के लिए खुलने की उम्मीद है।उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना पूरी तरह से चालू होने के बाद वंदे भारत मेट्रो ट्रेन जम्मू और श्रीनगर के बीच चलेगी।

विवेकानंद वि.सावंत
स्टेशन मास्टर, कोंकण रेलवे

"स्वतंत्र भारत @ 75: सत्यनिष्ठा से आत्मनिर्भरता"

प्रस्तावना

15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजी हुकूमत की नींव उखाड़कर भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की थी। हालांकि इस आजादी के साथ-साथ देश को बंटवारे का दंश भी झेलना पड़ा। लेकिन अब भारत को आजाद हुए सात दशक बीत चुके हैं। इन बीते सात दशकों में भारत ने विकास के कई अहम पड़ाव पार कर लिए हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने हर क्षेत्र में विकास के पथ पर अपने छोटे-छोटे कदम बढ़ाने शुरू कर दिए। बीते कुछ वर्षों में भारत ने प्रत्येक क्षेत्र में विदेशों पर अपनी निर्भरता को खत्म करने के उद्देश्य से भारत को आत्मनिर्भर भारत बनाने की तरफ अपने कदम बढ़ा दिए हैं। अब भारत हर रोज आत्मनिर्भर होने की तरफ छोटे-छोटे लेकिन मजबूत कदम बढ़ा रहा है। परंतु ये कदम आगे बढ़ाते हुए हमें सत्यनिष्ठा की पैनी नजर हर कदम पर रखनी आवश्यक होगी।

महात्मा गांधी ने भारत के नीति निर्माताओं और सुधारकों को जंतर देते हुए कहा था कि -

"... जो सबसे कमजोर और गरीब आदमी तुमनें देखा हो, उसे याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है? " यह जंतर एक ऐसा सर्वकालिक सत्य है, जिसे विगत सात दशकों से लगातार खंडित किया जाता रहा है।

भारत जैसे देश में आत्मनिर्भरता का मार्ग महात्मा गांधी के जंतर से जनमता है। आत्मसम्मोहित - नीतियां, कानून, योजनाएं और घोषणाएं तो अब तक तो करोड़ों विपन्नों के इस देश में मील का पत्थर साबित नहीं हो सकी हैं। गरीबी रेखा के ऊपर और नीचे खड़े तबकों के बीच का गहराता फासला अब तक गढ़े गए मार्गों की त्रासदी खुद बयां कर रही हैं।

आत्म-निर्भर भारत की ओर बढ़ता देश

भारत प्राचीन काल से ही आत्मनिर्भर रहा है और इस कड़ी मे आत्मनिर्भर बनकर आप खुद के परिवार के साथ-साथ आप अपने देश को प्रगति के मार्ग पर खड़ा करने मे मदद कर सकते हैं।

आत्मनिर्भर भारत बनने का तात्पर्य है कि हमारे देश को हर क्षेत्र मे खुद पर ही निर्भर होना होगा। भारत को देश में ही प्रत्येक वस्तु का निर्माण करना होगा। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है कि भारत के संसाधनों से बनी वस्तुओं को भारत में ही उपयोग में लाना है।

भारत ने हालांकि इन 75 वर्षों में प्रत्येक क्षेत्र में काफी विकास किया है। भारत ने बैलगाड़ी से लेकर चंद्रयान-2 तक का सफर अकेले अपने दम पर तय किया है। नए-नए आविष्कारों, खोजों और तकनीकी विकास से भारत ने विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आज विश्व समुदाय भारत की तरफ बडे उम्मीद व आशा भरी नजरों से देखता है। इसका सही अर्थ तब होगा जब हम अर्थात प्रत्येक भारतवासी सत्यनिष्ठा को भी हाथों हाथ लेकर चलें। बिना इसके कोई प्रगति कोई आत्मनिर्भरता उपयोगी नहीं।

भारत की अर्थव्यवस्था एशिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था

आजादी के बाद भारत तेजी से विश्व शक्ति बनकर उभरा है। भारत की अर्थव्यवस्था आज एशिया की

तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। इस कारण सामाजिक और आर्थिक रूप से कई बदलाव भी हुए हैं।सरकार की तरफ से आर्थिक मोर्चे पर किए गए प्रयासों की चर्चा करते हुए 'ऐसा माना जा रहा था कि राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन के बाद वर्तमान वित्त वर्ष की पहली तिमाही में जीडीपी में 23.9 फीसदी की जो गिराव गई है, उसट दर्ज कीसे निपटने और इसे फिर से पटरी पर लाने में भारत को एक-दो साल का समय लग जाएगा'। लेकिन भारत ने आर्थिक मोर्चे पर इस चुनौती से निपटने में ज़्यादा समय नहीं लिया और जल्द ही देश की जीडीपी पटरी पर आ गई।

अर्थव्यवस्था की मज़बूती पर बल देते हुए अप्रैल-अगस्त, 2020 में भारत में 35.73 बिलियन अमरीकी डॉलर का सर्वाधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश(एफडीआई) दर्ज किया गया है, जोकि पिछले वित्त वर्ष में इस दौरान दर्ज किए गए एफडीआई की तुलना में 13 फीसदी ज़्यादा है। ये सब लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए चलाए जा रहे है 'आत्मनिर्भर भारत' की मदद और सही समय पर सही निर्णय लेने से संभव हुआ है। उद्योग जगत वैश्विक स्तर पर निर्माण क्षेत्र में लागत को कम करने के रास्ते निकालकर इस दिशा में आगे बढ़ें और जल्द ही भारत को वैश्विक स्तर पर निर्माण क्षेत्र का हब बनाने की दिशा में ज़रूरी रास्तों पर विचार करें।

अंतरिक्ष में लम्बी छलांग

भारत ने अंतरिक्ष में लम्बी छलांग लगाई हैं। 19 अप्रैल, 1975 - इसरो ने अंतरिक्ष युग की दुनिया में प्रवेश कर एक अभूतपूर्व कीर्तिमान रचा था। भारतीय वैज्ञानिकों ने देश के पहले 360 किलोग्राम वजनी उपग्रह आर्यभट्ट को अंतरिक्ष में छोड़ा था।

लेकिन आज एक ओर जहां भारत ने अंतरिक्ष में स्वदेशी उपग्रह स्थापित कर सैटेलाइट की दौड़ में अपना अग्रणी स्थान बनाया है। वहीं दूसरी ओर चंद्रयान-2 को चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर उतारने का प्रयास किया गया। यह चंद्रयान-2 पूरी तरह से स्वदेशी था। इसके निर्माण से लेकर इसका डिजाइन तथा इसका प्रक्षेपण, सब कुछ भारत के वैज्ञानिकों के द्वारा ही किया गया था।

मंगल ग्रह का पहला मिशन नवंबर, 2013 में लॉन्च किया गया था। जो सफलतापूर्वक 24 सितंबर, 2014 को ग्रह की कक्षा में पहुंच गया। इसके अलावा और कई उपलब्धियां भी भारतीय अंतरिक्ष विभाग व वैज्ञानिकों के खातों में दर्ज हैं। इस क्षेत्र में भारत दिन-प्रतिदिन आत्मनिर्भर होता जा रहा है।

संचार क्रांति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति

भारत ने संचार के क्षेत्र में बीते 70 दशकों में महत्वपूर्ण व क्रांतिकारी प्रगति की है। गांव-गांव तक इंटरनेट व स्मार्टफोन पहुंच चुके हैं। अब भारत का एक छोटा सा गांव भी पूरे विश्व से जुड़ गया है। भारत में सबसे सस्ती दरों पर वायरलेस टेलिफोनी सुविधा भी उपलब्ध की जाती है।

भारत में डिजिटल इंडिया प्रोग्राम की शुरुआत की गई। जिसके माध्यम से लोग हर सुविधा व जानकारी घर बैठे बैठे ले सकते हैं। चाहे वो किसी सरकारी योजना की जानकारी हो या किसी अन्य विषय पर। हालांकि भारत सॉफ्टवेयर की एक महाशक्ति के रूप में जाना जाता है, फिर भी नागरिकों के लिए इलेक्ट्रॉनिक सरकारी सेवाओं की उपलब्धता अभी भी अपेक्षाकृत कम है। 2006 में अनुमोदित राष्ट्रीय ई-शासन योजना ने मिशन मोड परियोजनाओं और कोर आईसीटी बुनियादी सुविधा के माध्यम से एक सतत प्रगति की है, लेकिन देश में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण और ई-शासन में प्रभावी प्रगति सुनिश्चित करने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता है। डिजिटल इंडिया विजन इस पहल को वेग एवं प्रगति प्रदान करती है और इसमें इलेक्ट्रॉनिक सेवाओं, उत्पादों, उपकरणों, विनिर्माण और रोजगार के अवसरों को शामिल करने से समावेशी विकास को बढ़ावा मिलेगा। 21 वीं सदी में भारत अपने नागरिकों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रयास करेगा जहां सरकार और उसकी सेवाएं नागरिकों के दरवाजे पर उपलब्ध हों और लंबे समय तक सकारात्मक प्रभाव की दिशा में योगदान करें। डिजिटल इंडिया का उद्देश्य आई टी की क्षमता को इस्तेमाल कर के भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में परिणत करना है। बिजली,

पानी का बिल भरना अब लोगों के लिए बहुत आसान हो गया, जिसके लिए पहले वह घंटो लाइन में लगा करते थे। इससे एक ओर पारदर्शिता आ गई है और दूसरी ओर इसका नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है। जिस प्रकार सिक्के दो पहलू होते हैं। दूसरी ओर अपराध बढ़ गए हैं जिससे सुरक्षा पर सबसे बड़ा प्रश्न खड़ा हो गया है।सत्यनिष्ठा आवश्यक है तब कोई अपराध नहीं कर पाएगा। उत्कृष्टता पर पहुंचने के लिए लगन और सत्यनिष्ठा जरूरी है।

स्टार्टअप के माध्यम से युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना

भारत सरकार द्वारा स्टार्टअप स्टैंडअप योजना चलाई जा रही है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत के युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रोत्साहित करना, नए-नए इनोवेटिव आइडिया के जरिए नए-नए व्यवसायों को स्थापित करना। इसके लिए युवाओं को अच्छी खासी आर्थिक सहायता भी दी जा रही है।

वैसे तो महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में कार्य कर रही है परंतु इस क्षेत्र में महिलाओं द्वारा की गई पहल अविस्मरणीय है नौकरियां छोड़कर कारोबारी बन रही हैं महिलाएं। एक महिला ने तो गाय के गोबर से फैशनेबल कपड़े बनाने का स्टार्टअप शुरू किया है। कोई महिला वैकल्पिक चिकित्सा का स्टार्टअप, कोई ग्रॉफिक डिजाइनिंग, कोई ई-कैब स्टार्टअप तो कोई ई-कॉमर्स बिजनेस चलाने लगी है। एक महिला ने तो किराए पर कमरे, पेइंग गेस्ट आदि की ऑनलाइन सेवा शुरू की है।

इस प्रकार युवा अपने देश में ही रह कर अपने उद्योग धंधों को स्थापित करें। भारत में रोजगार पैदा हो सके और अधिक से अधिक वस्तुओं का निर्माण भारत में ही हो, ताकि हमारी दूसरे देशों पर निर्भरता खत्म हो जाए और भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत हो सके।

तकनीकी क्षेत्र में भी आत्मनिर्भरता

अभी हाल ही में भारत की रेल पटरी पर भारत में निर्मित "वंदे भारत एक्सप्रेस" ने फर्राटे से दौड़ लगाई। यह ट्रेन पूरी तरह से भारत के "मेक इन इंडिया प्रोग्राम" के तहत बनी हुई थी। यह ट्रेन पूरी तरह से स्वदेशी टेक्नोलॉजी से निर्मित है।

इसके अलावा भारत ने आईटी के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करके पूरे विश्व को चकित कर दिया।

कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर भारत

भारत कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन चुका है। आजादी के बाद भारत ने कृषि क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया है। उत्पादन के मामले में भारत ने कई देशों को पीछे छोड़ दिया है। भारत दालों का सबसे बड़ा उत्पादक है। चीनी का यह दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और कपास का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है।

भारत पशुधन के मामले में भी संपन्न राष्ट्र है। जिस कारण भारत दुनिया का बड़ा दूध और मक्खन उत्पादक भी है।

सैन्य शक्ति का विस्तार

भारत ने अपनी सैन्य शक्ति में अभूतपूर्ण विस्तार किया है। अत्याधुनिक हथियारों , उपकरणों के साथ-साथ राफेल से भी हमारी सेना सुसज्जित हो गयी हैं। दुनिया की सबसे तेज क्रूज मिसाइल "ब्रह्मोस" को सैन्य रक्षा प्रणाली में शामिल किया गया है, जिसे भारत और रूस द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया था।

निर्माण क्षेत्र पर आत्मनिर्भर

हाल ही के कुछ वर्षों में भारत में औद्योगिक क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। ये सब भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में ही उठाए गए हैं। भारत ने सबसे कम कीमत वाली नैनो कार बनाई। विश्व का सबसे बड़ा दुपहिया वाहनों का उत्पादक देश भारत ही है।

भारत की गिनती अब दुनिया के औद्योगीकृत देशों की श्रेणी में की जाती है। सड़कों, बंदरगाहों के अलावा विश्वस्तरीय निर्माणों में भी भारत ने आत्मनिर्भरता हासिल कर देश की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान की हैं।

उपसंहार

स्वतंत्रता से लेकर आज तक की भारत की विकास यात्रा शानदार रही हैं। चाहे क्षेत्र कोई भी हो, कृषि से लेकर अंतरिक्ष तक, संचार क्रांति से लेकर ट्रेन बनाने तक, हर काम में भारत धीरे-धीरे आत्मनिर्भर हो रहा है। नित नए-नए आविष्कारों और तकनीकी विकास को जन्म दे, भारत ने विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई हैं।

एक ओर जहां भारत ने आत्मनिर्भर बनने के लिए अभूतपूर्व विकास का मार्ग अपनाया। वहीं दूसरी ओर भारत अपने पूर्वजों के द्वारा दिए गए आदर्श मूल्यों, संस्कारों, समृद्ध परंपराओं को भी साथ लेकर चला है। भारत को अगर एक महाशक्ति के रूप में उभरना है तो उसे हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होना ही होगा और इसके लिए सबसे बड़ा मंत्र भी अपने साथ रखना भी उतना ही आवश्यक है।

सफलता में उतना ही श्रेय लेना जितना योगदान वास्तव में उस व्यक्ति का है। अधिक श्रेय मिल रहा हो तो विनम्रता से अस्वीकार कर देना। विफलता की स्थिति में आगे बढ़कर उसकी जिम्मेदारी को स्वीकार करना चाहिए उसमें उसके अधीनस्थों की भूमिका प्रमुख रही हो।

साथ ही किसी संगठन के कर्मी या स्व रोजगार से जुड़े प्रत्येक मनुष्य को यही सोचना चाहिए कि हम अपने सभी कार्यों में ईमानदार, विश्वसनीय और न्यायपूर्ण रहने की वचनबद्धता में विश्वास रखते हैं।

सत्यनिष्ठा का मूल मंत्र

हम अपने संस्थान या स्व रोजगार के प्रति निष्ठावान और समर्पित रहने के प्रति वचनबद्ध हैं। हम स्व अनुशासन में रहेंगे और अपने कार्य-कलापों के लिए उत्तरदायी होंगे। हम सभी अपेक्षाओं की पूर्ति इस तरह सुनिश्चित करेंगे कि हमारे संस्थान या रोजगार की विश्वसनीयता सदा बनी रहे।

नवोन्मेषी तकनीकों के माध्यम से,
भारत का विकास हमें करना है।
सत्यनिष्ठा के साथ आत्मनिर्भर बनते हुए ही महासत्ता बनना है।

– प्रिया पोकले
कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी भाषा का महत्व

निजभाषा उन्नति है, सब उन्नति का मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय सूल।।

भारतेंदु के उद्‌गार मानव जीवन और सभ्यता में भाषा को महत्व दर्शाता है। भाषा हमारे सोचने की दिशा निर्धारित करती है, हम बोले चाहे कोई भी भाषा मगर सोचते अपने मातृभाषा में ही है। मातृभाषा की तरक्की से ही साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उन्नति एवं प्रसिध्दी संभव है। और यह तरक्की प्रचार के माध्यम से ही संभव है। बाजारवाद के युग में यह कहावत सदूर प्रसिध्द है की, "जो दिखता है, वह बिकता है" ठीक वैसे ही आज हिंद ने संचार माध्यमों के द्‌वारा दुनिया भर क्रांति मचा दी है।

हिंदी के प्रचार के लिए 1949 से योजनाएं बनती प्रारंभ हो गयी थी, तब यह कार्य हिंदी प्रचारिणी सभाएं करती थी, किंतु आज हम देखते है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में सबसे अधिक योगदान सोशल मिडिया याने रेडिओ, टेलिव्हीजन, इंटरनेट दे रहा है। सोशल मिडिया भाषा के प्रचार-प्रसार का सबसे शक्तिशाली माध्यम है। इन्ही माध्यमों के कारण अब सार्वजनिक अमिथ्यक्ति भी आसान हो गई है, हिंदी ने सोशल मिडिया पर खुदको स्थापित कर लिया है। प्रचार-प्रसार में मीडिया प्लेटफार्म पर ट्‌विटर, फेसबुक, व्हाटस्‌अप, ब्लॉग आदि प्रमुख है। सर्व प्रथम हम देखते है आज ट्‌विटर पर हिंदी भाषा का प्रयोग करनेवालों की संख्या बढ़ती जा रही है। साथ ही ट्‌विटर की शब्द सीमा ने अपनी बाते कम से कम शब्दों में रखने का अभ्यास भी करवाया है। हिंदी के प्रचार में ब्लॉग को भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। अनेक हिंदे के ब्लॉग ऐसे हैं जो लोगो द्‌वारा प्रतिदिन देखे जाते है और जनमानस तक आपने उत्कृष्ट रूप में पहुंचती है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहयोगी संस्थाएं और आंदोलन के प्रमुख राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, राजाराममोहन रॉय, लोकमान्य बाळ गंगाधर टिळक, केशव चंद्रसेन, मदनमोहन और सावरकर थे। धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाएं, राजनीतिक संस्थाएं और साहित्यिक संस्थाएं इन सबका बढ़ा योगदान रहा है।

मिडिया ने हिंदी के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।दुनियाभर में भारतीय फिल्म, टेलिविजन कार्यक्रम देखें जाते हैं। इस से भी दुनिया में हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ है। सोशल मिडिया, इंटरनेट, मोबाईल के कारण युवा पिढी इस भाषा का सबसे अधिक प्रयोग कर रही है। भाषा मानव, अस्तित्व की एक प्रमुख विशेषता है, क्योंकि यह मनुष्यों को एक दूसरे के साथ संवाद करने और उनके बीच संबंध विकसित करने में मदत करती है।हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारतीय सिनेमा का योगदान बहुत है। हिंदी भाषा देश का श्वास है। हिंदी दिवस के अवसर पर इस विशेष कार्यक्रम में भारतीय सिनेमा की ऐसी यात्रा है जहाँ आप जानेगे कि कैसे भारतीय सिनेमा में हिंदी भाषा का देश को कोने-कोने में लोकप्रिय और प्रचलित कर दिया। विशेषत, अहिंदी भाषा क्षेत्रों में भारतीय सिनेमा केवल भारत में नहीं, अपितु पूरे विश्व में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का काम निरंतर कर रही है।हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाले जापान के हिंदी

डॉक्टर तोमियों मिजोकामी है। हिंदी भाषा सीखने और संस्कृति की जानकारी लेने हेतु हिंदी भाषा सीख ली गई है। भारत के माननीय पंतप्रधान नरेंद्र मोदी जी ने उन्हें विश्व हिंदी साहित्य संमेलन में पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया गया। जब डॉ. तोमियो मिजोकामी को पूछा तो उसने कहाँ विश्व की ज्ञान की भाषा अंग्रेजी है, लेकिन हिंदी हमारी दिल की भाषा है।

14 सितंबर को पूरे देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है। सरकारी विभागों में हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है। साथ ही हिंदी प्रोत्साहन सप्ताह का आयोजन किया जाता है। हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोलने जानेवाली भाषा है। इसे राजभाषा का दर्जा दिया गया था। प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के तौर पर मनाया जाता है।1918 में हिंदी साहित्य संमेलन में भारत के राष्ट्रपिता गांधीजी ने हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए पहल की थी। गांधीजी ने हिंदी को जनमानस की भाषा भी बताया था। इस पर वर्ष 1949 स्वतंत्र भारत की राजभाषा के प्रश्नपर 14 सितंबर 1949 में काफी विचार विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया की धारा 343 (1) में बताया गया है कि राष्ट्र की राजभाषा हिंदी और लिपी देवनागरी लिपी होगी।

लेकिन जब राजभाषा के रूप में हिंदी भाषा चुना गया और गैर हिंदी भाषी राज्य खासकर दक्षिण भारत के लोंगों ने इसका विरोध किया फलस्वरूप अंग्रेजी को भी राजभाषा का दर्जा देना पड़ा।लेकिन आज के समय में हिंदी भाषा लोगों के बीच से कहीं न कहीं गायब होती जा रही है और अंग्रेजी ने अपना प्रभुत्व जमा लिया है। यदि हालात यही रहे तो वो दिन दूर नहीं जब हिंदी भाषा हमारे बीच से गायब हो जायेगी, हमे यदि हिंदी भाषा का संजोए रखना है तो इसके प्रचार-प्रसार को बढ़ाना होगा। सरकारी कामकाजों में हिंदी प्राथमिकता देनी होगी। तभी हिंदी भाषा को जिंदा रखा जा सकता है।श्वभर की भाषा का इतिहास रखनेवाली संस्था 'एथ्नोलॉग' के अनुसार चीनी और अंग्रेजी भाषा के बाद हिंदी दुनिया भर में सर्वाधिक बोली जानेवाली तिसरी भाषा है। हिंदी ऐसी भाषा है जो प्रत्येक, भारतीय को वैश्विक स्तरपर सम्मान दिलाती है। दुनिया भर में आज 75 करोड़ से भी ज्यादा लोग हिंदी बोलते हैं।

हिंदी की बढ़ती, ताकद को महसूस करते हुए ही 'एमेजॉन, फ्लिपकार्ट, स्नॅपडील, ओएलएक्स," आदि दुनिया की दिग्गज ई- कॉमर्स कंपनियाँ हिंदी जाननेवाले ग्राहकों तक अपनी ज्यादा से जादा पहचान करती है।

संतोष वा.पाटोळे
कनिष्ठ अनुवादक,रत्नागिरी

राजभाषा पखवाडा

हिंदी दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय रेल प्रबंधक कार्यालय, रत्नागिरी में दिनांक 14 सितंबर 2023 से 29 सितंबर 2023 तक राजभाषा पखवाडा आयोजित किया गया।राजभाषा पखवाडे के दौरान आयोजित कार्यक्रमों का ब्यौरा निम्नानुसार है।

1) क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक, रत्नागिरी महोदय की उपस्थिति में आज दिनांक 14.09.2023 को सुबह 10.30 बजे क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक कार्यालय में हिंदी दिवस तथा राजभाषा पखवाड़े का उद्घाटन शुभारंभ।इस अवसर पर कुल 62 कर्मि उपस्थित थे।

2) दिनांक 14.09.2023 को सुबह 10.30 बजे चिपलूण स्टेशन में हिंदी दिवस तथा राजभाषा पखवाड़े का उद्घाटन शुभारंभ।इस अवसर पर कुल 18 कर्मि उपस्थित थे।

3) दिनांक 14.09.2023 को सुबह 10.30 बजे रत्नागिरी स्टेशन में हिंदी दिवस तथा राजभाषा पखवाड़े का उद्घाटन शुभारंभ।इस अवसर पर कुल 14 कर्मि उपस्थित थे।

4) दिनांक 14.09.2023 को सुबह 10.30 बजे कणकवली स्टेशन में हिंदी दिवस तथा राजभाषा पखवाड़े का उद्घाटन शुभारंभ।इस अवसर पर कुल 15 कर्मि उपस्थित थे।

5) दिनांक 14.09.2023 को क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक कार्यालय रत्नागिरी में हिंदी दिवस तथा राजभाषा पखवाड़े के अवसर पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कीया गया। इसी क्रम में कणकवली स्टेशन और चिपलूण स्टेशन पर भी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कीया गया।कुल 35 कर्मि उपस्थित थे (रत्नागिरी-20, चिपलूण-7, कणकवली-08)।

6)राजभाषा पखवाड़े के उपलक्ष्य में दिनांक 15.09.2023 को रत्नागिरी क्षेत्रीय कार्यालय में कंप्यूटरों में हिंदी यूनिकोड का उपयोग सुनिश्चित करने के लिए टेबल प्रशिक्षण प्रदान किया गया तथा इसके माध्यम से कर्मियों को हिंदी टाइपिंग में आनेवाली समस्याओं का निपटान करने का सकारात्मक प्रयास किया गया।कुल 23 कर्मि उपस्थित थे।

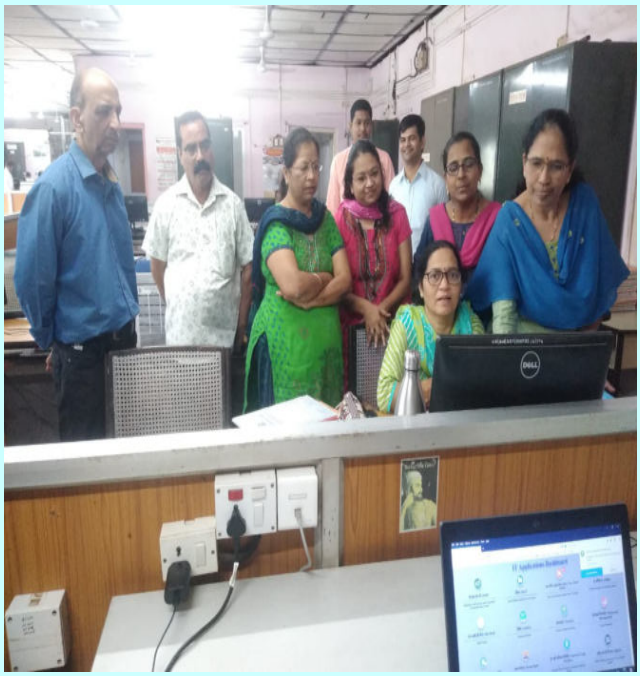

7)दिनांक 18.09.2023 को क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक कार्यालय रत्नागिरी में हिंदी दिवस तथा राजभाषा पखवाड़े के अवसर पर हिंदी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।कुल 15 कर्मि उपस्थित थे।

8)दिनांक 25.09.2023 को क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक कार्यालय रत्नागिरी में हिंदी दिवस तथा राजभाषा पखवाड़े के अवसर पर हिंदी वाक़ प्रतियोगिता का आयोजन कीया गया।कुल 09 कर्मचारी उपस्थित थे।

9) दिनांक 29.09.2023 को 15:30 बजे रत्नागिरी क्षेत्रीय कार्यालय सभागृह में हिंदी प्रश्न-मंच प्रतियोगिता और पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।इस अवसर पर कुल 52 कर्मी उपस्थित थे।

10)दिनांक 29.09.2023 को सहायक अभियंता कार्यालय,कणकवली में हिंदी प्रश्न-मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।इस प्रतियोगिता केअवसर पर कुल 22 कर्मी उपस्थित थे।

दिनांक 29.09.2023 को चिपलूण स्टेशन में हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के अवसर पर कुल 16 कर्मी उपस्थित थे।

उपरोक्त ब्योरे के अनुसार क्षेत्रीय रेल प्रबंधक कार्यालय रत्नागिरी में राजभाषा पखवाड़े के अवसर पर रत्नागिरी क्षेत्र में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारी तथा कर्मचारियों ने बहुत उत्साह से भाग लेकर हिंदी के प्रति अपना स्नेह को व्यक्त किया है। इसप्रकार राजभाषा पखवाडे का आयोजन सफलता पूर्वक किया गया।

क्षेत्रीय रेल प्रबंधक
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड,रत्नागिरी

"अपना प्यारा भारत"

प्यारा भारत, प्यारा भारत, अपना प्यारा भारत।
यहां कहीं बहती है गंगा, कहीं बहती है यमुना।
कहीं कावेरी कहीं हैं सिंधु। कहीं बहती गोदावरी।

प्यारा भारत, प्यारा भारत, अपना प्यारा भारत।
कहीं हैं होली के रंग, कहीं हैं दिवाली,
कहीं हैं ईद, कहीं क्रिसमस सभी लोग त्यौहार मनाते हैं।

प्यारा भारत, प्यारा भारत, अपना प्यारा भारत।
कहीं है गिद्दा, कहीं भांगड़ा, कहीं हैं, डांडिया की आवाजे।
कहीं हैं कत्थक, कहीं हैं घूमर।
सभी नृत्य यहां पर करतें हैं।

प्यारा भारत, प्यारा भारत,अपना प्यारा भारत।
कहीं है हिमालय, कहीं है मरुस्थल।
कहीं है नदियां, कहीं झीलें।

प्यारा भारत, प्यारा भारत, अपना प्यारा भारत।
कहीं है केशर की खुशबू, कहीं हैं
संतरे के बागान। कहीं है काजू, नारियल।
कहीं है हापुस (आम) की खुशबू।

प्यारा भारत, प्यारा भारत, अपना प्यारा भारत।
कहीं है सुंदर ताजमहल, कहीं है स्वर्णमंदिर।
कहीं हैं इंडिया गेट, तो कहीं हैं हवामहल।
प्यारा भारत, प्यारा भारत, अपना प्यारा भारत।

नवाब सिंह
रेल सुरक्षा बल, रत्नागिरी

राजभाषा विभाग,1976 के नियम 8(4) के अनुपालन में विनिर्दिष्ट किए गए विषय (उपक्रमों के लिए)

'क' तथा 'ख' क्षेत्र की राज्य सरकारों या संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासन और इन क्षेत्रों में स्थित केंद्रिय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों आदि और गैर-सरकारी व्यक्तियों को जाने वाले सभी पत्रादि हिंदी में भेजना।

- हिंदी में प्राप्त सभी पत्रादी के उत्तर हिंदी में ही देना।
- किसी कर्मचारी द्वारा हिंदी में दिए गए या हस्ताक्षर किए गए आवेदन,अपील या अभ्यावेदन का उत्तर हिंदी में देना।
- 'क' तथा 'ख' क्षेत्र से अंग्रेजीमें प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देना।
- राजभाषा कानुन की धारा 3(3)के अंतर्गत आने वाले प्रलेख अनिवार्य रुप से व्दिभाषी रुप में जारी करना।
- मानक मसौदों के माध्यम सें भेजे जाने वाले पत्र हिंदी में जारी करना।
- अग्रिम के लिए आवेदन पत्र ।
- रजिस्टर और सेवा पुस्तिकाओं के शिर्षक और प्रविष्टियां हिदी में करना।
- हात से लिखे जाने वाले नोट।
- उपस्थिति पंजिका में नामयऔर हस्ताक्षर।
- दौरा कार्यक्रम।
- टी.ए./डी.ए. बिल।
- अधिनस्थ कार्यालयों के निरीक्षण नोट में राजभाषा का उल्लेख।
- 'क' तथा 'ख' क्षेत्र को भेजे जाने वाले निफाफों पर पते हिंदी में लिखना।
- वर्ग 'ग' और 'घ' के रेल कर्मचारीयें की सेवा पुस्तिकाओं में इंतराज।
- नियुक्ति पत्र।
- पदोन्नति मामले।
- वरीयता सूची।
- निपटारा एंव पेंशन संबंधी कार्य।
- वर्ग ग और घ के कर्मचारियों के संदर्भ में अनुशासन और अपील संबंध मामले।
- मस्टर शीट एवं वेतल बिल।
- नक्शो, ड्राइंग, चार्टो के शीर्षक।
- ऑडीट रजिस्टर एवं संबधित रिपोर्ट।
- निरीक्षण कार्यो के सभी रजिस्टर रिपोर्ट।
- विभागिय बैठकों में हिंदी में चर्चा।
- शीर्ष बैठकों की कार्य सूची, कार्यवृत्त द्विभाषी जारी करना।
- प्रथम सूचना रिपोर्ट, चालान,रोचनामा हिंची में बनाना।
- कार्यलयाल कागजात पर हिंदी में हस्ताक्षर करना।
- द्विभाषी कंप्यूटरों पर हिजी में किए जाने वाले कार्य-
    1. पी.सी.डी.ओ./एम.सी.डी.ओ
    2. वेतन पर्चियां
    3. सामान्य पत्राचार
    4. प्रोफार्मा
    5. लिरीक्षण रिपोर्ट

****

दोस्ती

पश्चिम निमाड़ में निवाली नामक एक छोटासा गॉव था। वह अपनी तहसील से लगभग 20 की. मि. दूर स्थित होने के कारण और जनसंख्या कम होने के कारण पूर्ण रूप से विकसित नहीं था। और इस कारण वहा पर यात्री आवागमन के साधनों का अभाव था। लेकिन वहां के शासकीय बालक विद्यालय के शिक्षण का स्तर बहुत अच्छा होने के कारण कई तहसील के लोग अपने बच्चो को पढ़ाने के लिए यहा के स्कूल में भेजने की कोशिश करते थे, वही अजय नामक बालक 8 वी की पढाई के लिए शहर से आया था और उसने बालक विद्यालय के छात्रावास में प्रवेश लिया था। अजय की कक्षा में विजय नामक उसका हमउम्र छात्र भी था जो छात्रावास में भी अजय के साथ ही रहता था। धीरे धीरे अजय विजय की स्ती बढ़ती गई और दोनों हमेशा एक दूसरे के साथ ही समय बिताते थे, पढ़ने में दोनों ही तेज थे और न सिर्फ तिमाही छमाही परीक्षा में अव्वल आते थे अपितु वार्षिक परीक्षा में भी दोनों के नंबर सभी छात्रों से हमेशा अधिक ही रहा करते थे। विजय का घर छात्रावास से 10 की. मी. दूर एक गांव में था, परन्तु वह अजय की दोस्ती में और पढाई में इतना मग्न हो गया की कभी उसकी घर जाने के इच्छा ही नहीं होती थी। देखते ही देखते दोनों ने 9 वी. की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली थी और जब अजय छुट्टियों से 10 वी. की पढाई करने के लिए विद्यालय आया तो उसने देखा की विजय विद्यालय नहीं आ रहा हैं। इस कारण अजय का मन भी पढाई में नहीं लग रहा था, और एक दिन उसने विजय से मिलने का निर्णय लिया और अपने शिक्षक से विजय के गांव का पता लेकर जाने की अनुमति भी ली, और अजय, विजय की गांव के और चल पड़ा यातायात के साधन नहीं होने के कारण और विजय का गांव अंदर की तरफ होने के कारण उसे अपना सफर पैदल ही तैय करना पड़ा। रास्तों का कोई ठिकाना नहीं था कभी कोई पगडण्डी तो कभी खेत के मध्य से गुजरते हुए वो जैसे तैसे विजय के घर पहुंचा। अजय को देखकर विजय बेहद खुश हुआ और उसको गले से लगा दिया। अजय ने देखा विजय का घर साधारण सा एक छोटी झोपड़ी की तरह था जिस मे बिजली की भी व्यवस्था नहीं थी। घर में विजय की माँ और पिताजी थे।

अजय ने विजय से पूछा तुम 10 वी की पढाई के लिए विद्यालय क्यों नहीं आ रहे हो तब विजय ने मायूस होकर जवाब दिया की, मेरे पिताजी जहाँ काम करते थे वहां से उनको निकाल दिया गया हैं क्योंकि अब बड़ी बड़ी मशीनरी आने के कारण मजदूरों की उनको अधिक जरूरत नहीं हैं। अजय बोला तुम अपने पिताजी को बोलो की, खुद का कोई छोटा मोठा व्ययवसाय शुरू कर दे। विजय बोला नहीं दोस्त, यह नहीं हो सकता, क्योंकि व्यवसाय के लिए हमारे पास उतना धन नहीं हैं। अजय बोला तुम धन की चिंता मत करो, मेरे पिताजी एक कम्पनी में खजानची का कार्य करते हैं और इस कारण उनका बैंको में आना जाना रहता हैं। मैं अपने पिताजी से बात करता हूँ, कुछ न कुछ मार्ग मिल ही जायेगा लेकिन तुम कल से ही विद्यालय आओ। यह सुनकर विजय के पिताजी ने अजय से कहा, बेटा तुम आज रात इधर ही रुक जाओ और कल सुबह दोनों एक साथ ही चले जाना और अपने पिताजी से कहना की मैं मुर्गी पालन का व्यवसाय करना चाहता हूँ, हो सके तो उसके लिए मेरी सहायता करे और मेरा प्रणाम भी कहना। दूसरे दिन सुबह दोनों दोस्त दिनचर्या समाप्त करके ख़ुशी ख़ुशी विद्यालय की और चल पढ़े। अजय के पिताजी ने

विजय के पिताजी को बैंक से कर्ज दिलवाने में मदत की और विजय के पिताजी ने निवाली गॉव के पास ही एक छोटासा मुर्गी पालन का व्यवसाय शुरू कर दिया। दोनों दोस्त अब बेहद खुश थे और दिल लगाकर पढाई कर रहे थे। समय बीतता गया विजय के पिताजी का छोटा सा मुर्गी पालन और का व्यवसाय अब बड़ा हो गया था तथा एक अच्छी रकम उनको मिलने लगी जिससे नियमित वह बैंक का कर्ज चुकाकर भी कुछ रकम परिवार के पालन पोषण के लिए बचाने लगे, दोनों दोस्तों ने अच्छे नंबरो से 10 वी. के साथ साथ 12 वी. कक्षा की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली । निवाली गॉव में 12 वी. तक ही विद्यालय में पढाई होती थी और आगे की पढाई के लिए 20 की. मी. दूर तहसील में पढाई के लिए जाना पड़ता था, अजय उच्च अध्ययन के लिए अपने शहर लौट गया और विजय ने तहसील के विश्वविद्यालय में आगे की पढाई के लिए दाखिला ले लिया। दोनों दोस्त नियमित एक दूसरे को पत्र लिखते थे और एक दूसरे की जानकारी लेते रहते थे परन्तु, एक वर्ष के बाद अचानक अजय का पत्र आना बन्द हो गया और विजय के पत्रों का जवाब भी अजय ने देना बंद कर दिया था, विजय इस बात से थोड़ा दुखि जरूर हुआ परन्तु, उसने सोचा की शायद उसका दोस्त बहुत व्यस्तता के कारण उसके पत्रों का जवाब नहीं दे रहा हैं, इसलिए विजय ने अपने मन को समझा लिया और अपनी पढाई में व्यस्त हो गया। स्नातक की परीक्षा के साथ साथ विजय ने संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षा भी दी और विजय दोनों ही परीक्षा में अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण हुआ, संघ लोकसेवा आयोग के द्वारा विजय का जिल्हा अधिकारी के पद चयन हो गया , विजय की प्रथम नियुक्ति अजय के शहर में ही हुई।

विजय यह जानकर बहुत खुश हुआ की, अब वह अपने दोस्त से रूबरू मुलाकात कर सकता हैं, नियुक्ति के पछ्यात एक दिन विजय, अजय के बताये पत्ते पर गया परन्तु वह उसे पता लगा की अजय का परिवार यह घर बेचकर चार साल पहले ही कही और चले गए हैं। विजय भारी मन से वापस लौट गया, परन्तु विजय के मन में अजय से मिलने की ललक कम नहीं हो रही थी, इसलिए विजय ने अजय के पिताजी की कम्पनी से अजय का नया पत्ता प्राप्त किया और एक शाम को वह अजय से मिलने चला गया, विजय ने देखा की अजय का घर गलियों में बनी कई चालो के मकानों में से एक चाल में था और उन गलियों की अवस्था बेहद ख़राब थी जगह जगह कचरा पढ़ा था और नालियों का पानी सड़क पर बह रहा था, जैसे तैसे अजय का नाम पूछ पूछ कर विजय अजय के घर के सामने पहुंचा और दरवाजे पर दस्तक दी। थोड़ी देर में दरवाजा खुला और अजय विजय के सामने खड़ा था, विजय को अचानक सामने देख कर अजय क्षण मात्र के लिए थम सा गया और फिर विजय को गले से लगाकर भाहुक हो गया, अचानक विजय का ध्यान अजय के पैरो के तरफ गया और उसने देखा की अजय का 1 पैर नकली हैं यह देखकर विजय की आंखों से आसूं निकलने लगे तब अजय ने विजय से कहा दोस्त तु मेरी चिंता मत कर मैं बिलकुल ठीक हूँ। तब विजय ने भरे गले से अजय से पूछा यह कैसे हुआ? अजय ने कहा दोस्त जैसे ही मैं 12 वी. करके शहर वापस आया था उसके 1 वर्ष के पछ्यात मेरे पिताजी और मेरे साथ एक सड़क दुर्घटना हुई थी जिसमे पिताजी को सर पर गहरी चोट लगी और मेरा एक पैर पूरी तरह से ख़राब हो गया था, अस्तपाल के खर्चे के लिए हमें अपना मकान बेचना पड़ा और फिर भी पिताजी जीवित नहीं रह पाए और मेरा एक पैर भी नकली लगाना पड़ा इस कारण हमारी आर्थिक स्थिति बहुत ख़राब हो गयी और मुझे पढाई छोड़कर परिवार के भरण पोषण और बहन की पढाई के लिए एक निजी कम्पनी में कंप्यूटर ऑपरेटर की नौकरी करनी पड रही हैं, यह सुनकर विजय बेहद दुखी होकर बोला अजय, तुम पढ़ने में बहुत होशियार हो और तुमको आगे की पढाई करनी ही चाहिए, अजय ने कहा की पूरा दिन कम्पनी के काम में निकल जाता हैं इसके लिए पढाई के लिए समय नहीं मिल पाता। तब विजय ने कहा की अजय तू कम्पनी वालों से बात कर और उनको बता की मैं आधे दिन ही काम कर पाउँगा, तब अजय ने कहाँ दोस्त कम्पनी से मिलने वाले वेतन से ही जैसे तैसे बहन की पढाई और घर का खर्च चल रहा हैं और यदि आधे दिन का वेतन नहीं मिलेगा तो यह सब करना कैसे संभव होगा?, विजय बोला तू चिंता मत कर मुझे

जिल्हा अधिकारी कार्यालय में नौकरी मिल चुकी हैं और मैं अकेला ही रहता हूँ इसलिए मेरा वेतन बच जाता हैं जो अब तेरे काम आएगा। अजय ने कहा मैं तेरे पैसे कैसे ले सकता हूँ, यह ठीक नहीं हैं तब विजय बोला दोस्ती में यह मायने नहीं रखता जब मेरे घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी तब तूने अपने पिताजी की मदत से हमें अपने व्यवसाय को शुरू करवाने में आर्थिक सहायता सहजता से उपलब्ध करवाई उसी का परिणाम हैं की आज मैं अपनी पढाई पूरी कर के सरकारी नौकरी कर रहा हूँ, इसलिए मुझ पर तेरा पूरा हक् हैं और मैं तेरी एक नहीं सुनूंगा तुझे मेरी बात मानना ही पड़ेगी और जैसा मैं बोल रहा हूँ वैसा ही करना पड़ेगा। विजय की प्यार भरी डाट और खुद के लिए विजय के दिल में इतना अधिक प्यार देख कर अजय ने उसकी बात मान ली, विजय ने अजय की कम्पनी के मैनेजर से अजय को आधे दिन की नौकरी करने देने की बात कर ली।

जिल्हा अधिकारी के आदेश की अवहेलना करने की हिम्मत कम्पनी के मैनेजर में नहीं थी इसलिए उसने विजय से कहा की श्रीमान अजय जब चाहे ड्यूटी पर आ सकता हैं और आधे दिन की ड्यूटी कर के जा सकता हैं तथा अजय को वेतन 50 प्रतिशत नहीं , 75 प्रतिशत दे दूंगा, यह सुनकर विजय ने मैनेजर का आभार व्यक्त किया और कहा की, अजय को मेरे पद पर और मैंने आपसे ऐसा कुछ कहा यह मत बताना। अजय ने अपनी नौकरी के साथ साथ आगे की पढाई भी शुरू कर दी, अजय बहुत होशियार था इसलिए उसने अपना स्नातक अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण कर लिया। विजय यह जानता था की, अजय बहुत होशियार हैं, इसलिए विजय ने अजय को संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षा देने के लिए प्रोत्साहित किया। अजय ने विजय से कहा, दोस्त शायद मैं इस परीक्षा को पास नहीं कर पाउँगा तब विजय ने अजय से कहा, तुझे मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। तू पढाई में बहुत होशियार हैं और तुम्हारी याददास्त बहुत ही तेज हैं इसलिए तुमको यह प्रतियोगिता परीक्षा देनी ही होगी। अजय ने मुस्कुराकर कहा विजय तुम मानोगे नहीं यह मैं जानता हूँ इसलिए मैं यह परीक्षा जरूर दूंगा, विजय ने प्रतियोगिता परीक्षा की पढाई के लिए अजय को सभी किताबे लाकर दी। अजय ने पूरी तल्लीनता से पढाई कर के संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षा दी और उसके प्रत्येक चरण में उत्तीर्ण होकर अंत में उप जिल्हा अधिकारी के पद के लिए नामांकित हो गया। जिस समय अजय का परिणाम आया तो विजय ने उसके घर जाकर अजय को और उसके परिवार को यह खुश खबरी सुनाई और पूरी चाल में मिठाई भी वितरित की। अजय के साथ साथ उसके माताजी और बहन भी बहुत खुश हो गए, विजय ने अजय से कहा इतनी बड़ी सफलता मेरे दोस्त ने प्राप्त की इसलिए कल हम सब बाहर घूमने जायेंगे और दूसरे दिन विजय ने उनको जिल्हा अधिकारी कार्यालय में आने के लिए कहा, अजय अपने परिवार के साथ जिल्हा अधिकारी कार्यालय में पहुंचा और जब वहां जाकर विजय के कार्यालय के बारे में पूछताछ की तो एक कर्मचारी उनको लेकर जिल्हा अधिकारी कक्ष के सामने पहुंचा और कहा की विजय साहब का यहीं कार्यालय हैं।

अजय ने कार्यालय के सामने बैठे कर्मचारी से कहाँ की मुझे विजय साहब से मिलना हैं, यह सुनकर कर्मचारी अंदर गया और विजय को अजय के आने की बात बताई। विजय तुरंत अपनी कुर्सी से उठा और दौड़ते हुए दरवाजे की तरफ गया, दरवाजा खोलकर अजय को गले से लगा लिया और अजय की माताजी को प्रणाम कर के उन सब को कार्यालय के अंदर लेकर आया और अंदर कुर्सी पर बैठने को कहा तो अजय ने विजय से कहाँ दोस्त यह तो जिल्हा अधिकारी का कार्यालय हैं, यदि साहब ने हमें सब को यहाँ देखा तो नाराज हो सकते हैं, विजय ने मुस्कुराते हुए कहाँ, जब जिल्हा अधिकारी का परम मित्र और उसका परिवार उसके कार्यालय में बैठेगा तो वह नाराज नहीं अपितु बहुत खुश होगा यह सुनकर अजय आश्चर्यचकित होकर विजय को देखने लगा और बोला विजय क्या आप ही जिल्हा अधिकारी हैं? विजय ने कहाँ हाँ दोस्त मैं ही जिल्हा अधिकारी हूँ। अजय ने कहाँ आप ने यह बात हमें पहले क्यों नहीं बताई विजय ने हसते हुए अजय का हाथ अपने हाथ में पकड़ कर कहाँ हाँ दोस्त तुमको यह बात नहीं बताई इसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ लेकिन जिस तरह मेरा पद तुमको मालूम होते ही मैं तुम्हारे लिए तू से आप हो

गया और मैं नहीं चाहता था की मेरा पद हम दोनों की दोस्ती के मध्य आये, यदि यह बात तुमको मालूम होती तो तुम कभी भी मेरे साथ इतने सहज नहीं हो पाते और यही मैं नहीं चाहता था, यह सुनकर अजय ने भाहुक होकर विजय को गले से लगा लिया। विजय ने अपनी सरकारी गाड़ी में अजय और उसके परिवार को बिठाया तथा सभी मिलकर खुशीखुशी घूमने चले गए।

कहानी से शिक्षा :-

01. अच्छे कर्मों का फल हमेशा अच्छा ही मिलता हैं।

02. दोस्ती हमेशा निस्वार्थ होनी चाहिए।

भूपेंद्र ए.कोवे

स्टेशन अधीक्षक,रत्नागिरी

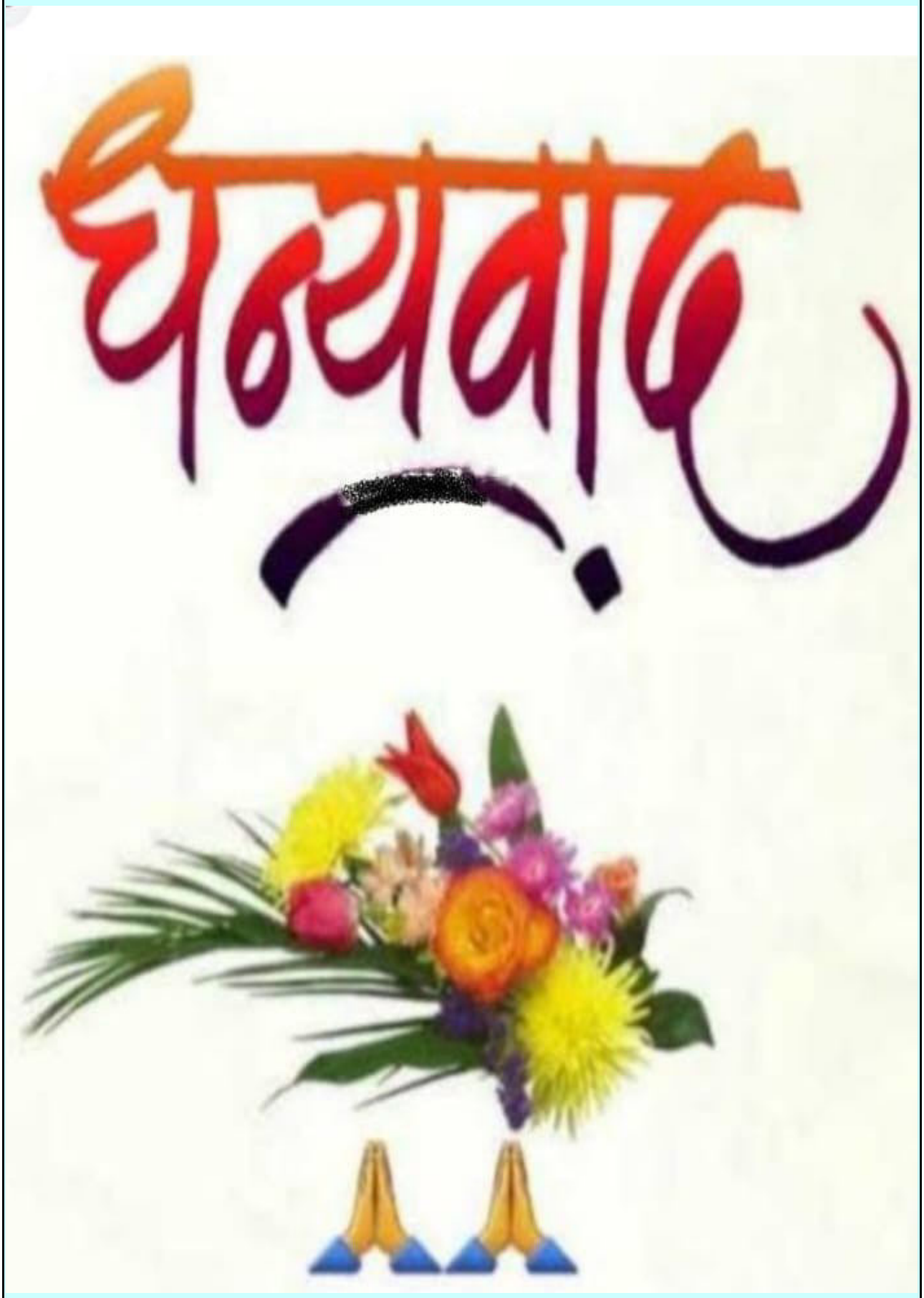
धन्यवाद